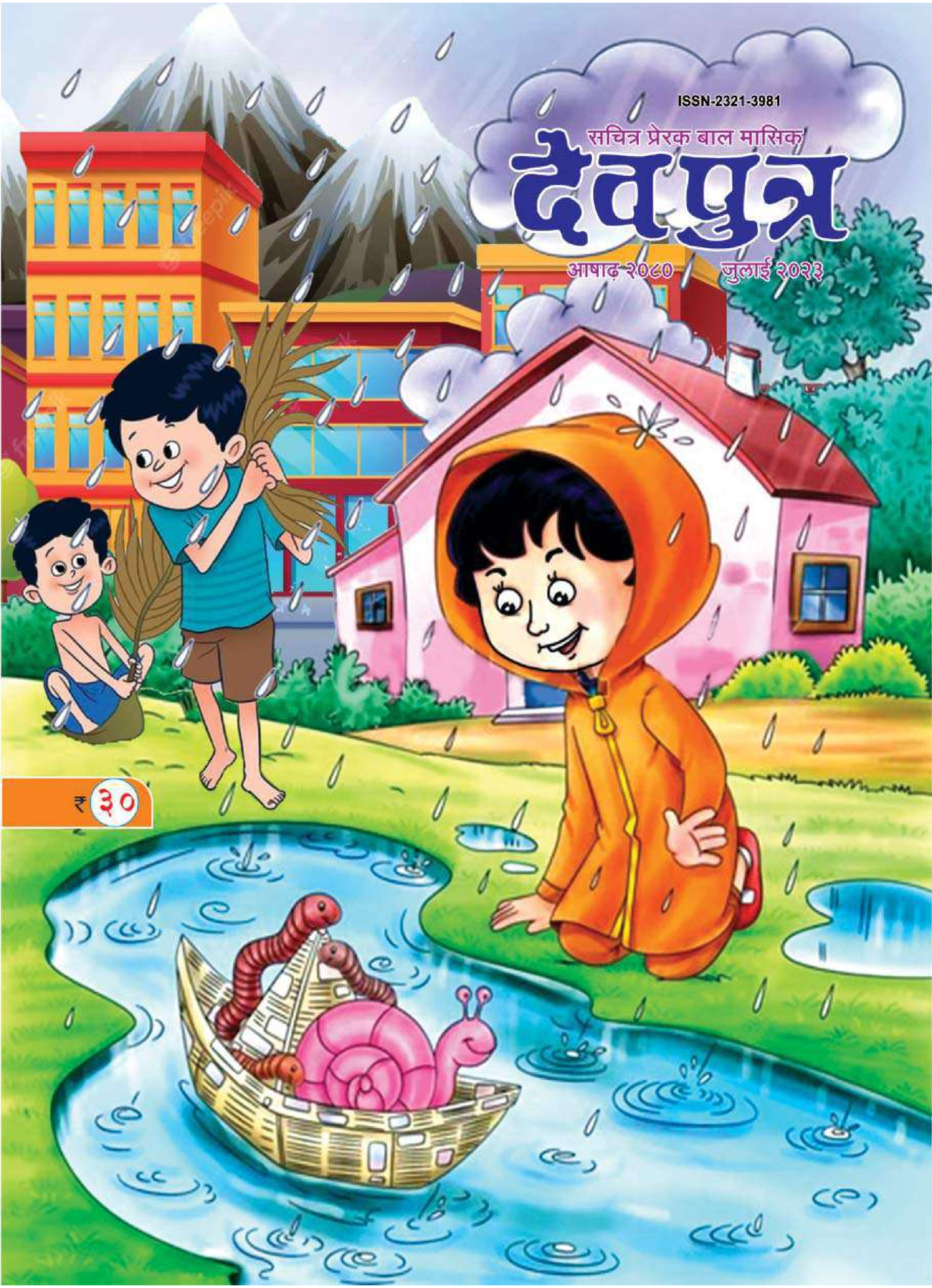
ISSN-2321-3981
सचित्र प्रेरक बाल मासिक
देवपुत्र
आषाढ़ २०८० / जुलाई २०२३
₹ ३०

रंग–बिरंगा यह गुलदस्ता

– प्रकाश मनु

अपना भारत भी है भाई,
रंग–बिरंगा सा गुलदस्ता।

सब फूलों की अपनी खुशबू
सब फूलों की अपनी रंगत,
सबकी अलग कहानी लेकिन
एक साज पर करते संगत।

देख–देख सुंदरता बाँकी,
बड़ी अजब यह अपनी झाँकी,
आसमान भी कह उठता है
इसीलिए तो हँसता–हँसता
बड़ा अजब है यह गुलदस्ता।

देखो–देखो, अपना भारत
रंग–बिरंगा है गुलदस्ता।

गीता है, रामायण इसमें
वेदों की है कथा निराली,
पंचतंत्र की अमर कथाएँ
सुन चेहरे पर आती लाली।

संतों की है मीठी बानी
गाते मिलकर सूर–कबीरा,
दूर–दूर तक हवा गूँजती
जब गाती है सुर में मीरा।

कितनी अलग–अलग हैं राहें,
कितनी अलग–अलग हैं चाहें
प्रेम भाव से मिल जाता है
लेकिन सबको अपना रस्ता।
रंग–बिरंगा यह गुलदस्ता।

अपना भारत भी है भाई,
रंग–बिरंगा सा गुलदस्ता।

अभी अँधेरा है पर घर में
मंजिल बहुत दूर है भाई,
दूर गरीबी हो जाए अब
छेड़ेंगे हम यही लड़ाई।

कल का भारत नया बनेगा
सपनों जैसा खूब सजेगा,
हँस–हँसकर कहते सब बच्चे
कंधों पर टाँगें हैं बस्ता।
रंग–बिरंगा यह गुलदस्ता।

अपना भारत नया–निराला,
रंग–बिरंगा है गुलदस्ता।

– फरीदाबाद (हरियाणा)

सचित्र प्रेरक बाल मासिक

देवपुत्र

(विद्या भारती से सम्बद्ध)

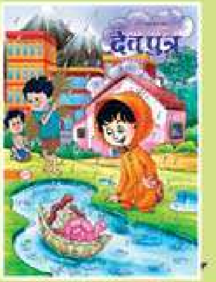

आषाढ़	२०८०	वर्ष	४४
जुलाई	२०२३	अंक	०१

प्रधान संपादक
कृष्ण कुमार अष्ठाना

प्रबंध संपादक
शशिकांत फडके

मानद संपादक
डॉ. विकास दवे

कार्यकारी संपादक
गोपाल माहेश्वरी

मूल्य

एक अंक	:	३० रुपये
वार्षिक	:	२०० रुपये
पन्द्रहवर्षीय	:	२००० रुपये
सामूहिक वार्षिक	:	१५० रुपये

(कम से कम १० अंक लेने पर)

कृपया शुल्क भेजते समय चैक/ड्राफ्ट पर केवल 'सरस्वती बाल कल्याण न्यास' लिखें।

संपर्क

४०, संवाद नगर,
इन्दौर ४५२००१ (म. प्र.)
दूरध्वनि: (०७३१) २४००४३९

e-mail:
व्यवस्था विभाग
devputraindore@gmail.com
संपादन विभाग
editordevputra@gmail.com

अपनी बात

प्यारे भैया–बहिनो!

गुरु वह होता है जो हमें हमारे अन्दर की शक्तियों से परिचय कराता है। जिसके कारण हमारे अन्दर से परिवर्तन आने लगता है। केवल बाहरी परिवर्तन स्थायी नहीं होते जैसे किसी कच्चे आम को ऊपर से रंग करके हरे से पीला दिखा भी दिया जाए तो उसमें पके आम जैसा रस व स्वाद नहीं आ सकता।

'संस्कार' और 'उपचार' इन दो शब्दों से हम प्रायः परिचित हैं। किसी वस्तु या व्यक्ति के बिगड़ जाने पर उसे ठीक करना उपचार है लेकिन किसी वस्तु या व्यक्ति में दोष उत्पन्न ही न हो ऐसी क्षमता उत्पन्न कर देना यह 'संस्कार' है। हम सतही तौर पर किए कार्य–व्यवहार को औपचारिक कहते हैं और इसका अर्थ प्रायः अनावश्यक या महत्वहीन होते हुए भी किए जाने वाले कार्य के रूप में रूढ़ हो चला है। गुरु हमें संस्कार देते हैं, अन्य हमें उपचार देते हैं। उपचार में एक विकार दूर होने पर भी दूसरा विकार उत्पन्न हो सकने की संभावना रहती है। संस्कार में यह दोष नहीं रहता।

संस्कार वही कर सकता है जो स्वयं संस्कृत हो। जलता हुआ दीपक ही दूसरे दीपक को जला सकता है और विशेषता यह कि दूसरे दीए को जलाकर भी पहले दीए की प्रकाश क्षमता कम नहीं होती, पर दूसरे में तीसरे, चौथे दीए को जलाने की क्षमता होती है। उनमें पहले दीए जितनी ही प्रकाश क्षमता आ सकती है। यदि दूसरे दीए की धारण क्षमता कम है यानि आकार, तैल, बाती कम क्षमतावान है या वह योग्य स्थान पर नहीं है तो कम, या अधिक है तो पहले से भी अधिक प्रकाशवान होने की भी संभावना है। यह भारतीय ज्ञान परम्परा का दर्शन है।

लेकिन 'गूगल–गुरु' की शरण में रहकर निरंतर अपने मस्तिष्क को अपने लिए प्रायः अनावश्यक, अनुपयोगी जानकारियों को ठूँस रही नई पीढ़ी को यह जानना चाहिए कि हर जानकारी, ज्ञान नहीं है। न गुरु के समान गूगल के पास यह विवेक ही है कि कौन–सी जानकारी, कब, किसे, कितनी व कैसे देनी जो आपके और समाज के भी हित में होगी। इसलिए 'गुरु' का स्थान गूगल कभी भी नहीं ले सकता है। 'गुरु' निर्विकल्प है, बस एक सूत्र और स्मरण रहे **'पानी पीजिए छान के गुरु कीजिए जान के'**। सच्चे गुरु की खोज जिस क्षण पूरी हो जाएगी जीवन की पूर्ण सफलता में कोई संदेह नहीं रहेगा। गुरु पौर्णिमा के पावन प्रसंग पर यह चिंतन उचित ही है।

आपका
बड़ा भैया

web site - www.devputra.com

॥ अनुक्रमणिका ॥

कहानी

- बात बन गई -डॉ. कुसुमरानी नैथानी १४
- सुंदर सुंदर नन्हीं चिड़ियाएँ -बलदाऊराम साहू ३४
- सबसे कठिन काम -रेनू सैनी ४६

प्रसंग

- जब आजाद बहादुर..... -अभय मराठे २८

छोटी कहानी

- छुटकी -अनिता चन्द्राकर ०५
- सज्जनता की पोशाख -डॉ. बानो सरताज २३
- चिर्री और चिड़वा -शिवचरण चौहान २९

लघुकथा

- पंखुड़ियों की व्यथा -मीरा जैन ०९
- असली प्रतिभा -गोविन्द भारद्वाज ३७

नाटक

- सत्यमार्ग -डॉ. घमंडीलाल अग्रवाल ०६

बाल प्रस्तुति

- पिताजी आप महान हैं -खुशबू राजपूत ४४

आत्मकथा

- हिमालय की आत्मकथा -रामगोपाल राही ३०

कविता

- रंगबिरंगा यह गुलदस्ता -प्रकाश मनु ०२
- चंदा मामा मुँह धोने आता -अशोक जैन ०९
- खेत भरे हैं पानी से -श्यामसुन्दर श्रीवास्तव 'कोमल' १३
- धम्मक धम्मा -मुग्धा पाण्डेय २२
- हम पंछी बन जाएँ -टीकेश्वर सिन्हा गब्दीवाला ३३
- हठकर बैठा चंद्र एक दिन -धर्मेश सिंह ४१

स्तंभ

- सच्चे बालवीर -रजनीकांत शुक्ल १०
- आपकी पाती - १२
- बाल साहित्य की धरोहर -डॉ. नागेश पांडेय 'संजय' १६
- छः अँगुल मुस्कान -ऋषिमोहन श्रीवास्तव २४
- घर का वैद्य -उषा भण्डारी २५
- राजकीय मछलियाँ -डॉ. परशुराम शुक्ल २६
- अशोक चक्र : साहस का सम्मान - २७
- शिशु गीत -डॉ. चक्रधर 'नलिन' २७
- विज्ञान व्यंग -संकेत गोस्वामी ३८
- गोपाल का कमाल -तपेश भौमिक ३९
- शिशु महाभारत -मोहनलाल जोशी ४०
- पुस्तक परिचय - ४३
- विस्मयकारी भारत -रवि लायटू ५१

आलेख

- जीव जन्तु पहचाने वर्षा की.... -दिनेशप्रताप सिंह चित्रेश २१

चित्रकथा

- मित्रता दिवस -देवांशु वत्स २०
- हल -संकेत गोस्वामी ४०
- चूहों से घुटकारा -देवांशु वत्स ४९

बौद्धिक क्रीडा

- बुद्धि की परख -चाँद मोहम्मद घोसी २४
- व्यंग्य चित्र -राजेश गुजर ४८
- इस तरह बनाओ -संकेत गोस्वामी ५०

क्या आप देवपुत्र का शुल्क नेट बैंकिंग से जमा करा रहे हैं? तो कृपया ध्यान दें!

देवपुत्र का शुल्क इसकी प्रकाशन संस्था - **सरस्वती बाल कल्याण न्यास** के खाते में ही जमा कराएँ। विवरण इस प्रकार है- खातेदार - **सरस्वती बाल कल्याण न्यास बैंक - स्टैट बैंक ऑफ इण्डिया, एम.वाय.एच.परिसर शाखा, इन्दौर** खाता क्रमांक-**38979903189** चालू खाता **(Current Account) IFSC- SBIN0030359** राशि जमा करने के बाद जमा पर्ची को देवपुत्र के ई-मेल **ID devputraindore@gmail.com** पर अवश्य भेजिए। नेट बैंकिंग में प्रेषक के कॉलम में पहले अपना स्थान लिखें फिर **सरस्वती शिशु मंदिर** का संक्षेप लिखें तो सन्देश ठीक आता है। उदाहरण के लिए -सरस्वती शिशु मंदिर, संजीत मार्ग, मंदसौर ने देवपुत्र का शुल्क भेजा तो उन्हें प्रेषक में लिखना चाहिए - ''**मन्दसौर संजीत मार्ग SSM**'' आशा है सहयोग प्रदान करेंगे।

छुटकी

– अनिता चन्द्राकर

विद्यालय से लौटते समय टुकटुक की नजर, सड़क किनारे चुपचाप बैठे बिल्ली के एक छोटे से बच्चे पर पड़ी। वह उसके पास गई और उसे अपने हाथों में उठा लिया। टुकटुक रास्ते भर उसका अच्छा-सा एक नाम सोचने लगी। लाली बछड़ा, चुनमुन चूजा और भानू पिल्ला के बारे में सोचते-सोचते उसने तय किया कि उसका नाम छुटकी रखेगी।

घर पहुँचते ही उसने माँ को पुकारा, ''माँ! माँ! देखो ये छुटकी है, इसके लिए दूध दे दो। यह बहुत भूखी है।''

माँ टुकटुक की बात सुनकर बहुत गुस्सा हो गई। ''दिन भर तुम गाय-बछड़ों के पीछे लगी रही हो। चूजे और पिल्ले के साथ दिनभर खेलती रहती हो और अब इसे घर ले आई।''

माँ को नाराज होते देख, टुकटुक रसोई घर में गई और बोतल में दूध लाकर छुटकी को पिलाने लगी। छुटकी जल्दी-जल्दी दूध पीने लगी। टुकटुक ने छुटकी को कपड़े से पोछा और स्नेह से उसे सहलाने लगी। वह अकेले ही छुटकी का ध्यान रखती। अब उसका पूरा ध्यान छुटकी की ओर था। उसे विद्यालय जाने का भी मन नहीं करता था। जब विद्यालय की घंटी घर से सुनाई देती, तब माँ की डाँट पड़ती और वह तैयार होकर विद्यालय जाती।

विद्यालय से आते ही वह फिर से छुटकी के पास चली जाती। उसे दूध पिलाती और उसके साथ खेलती रहती। टुकटुक की माँ छुटकी को बिल्कुल भी पसंद नहीं करती थी। टुकटुक को छुटकी का ध्यान रखते देखकर उसे बहुत गुस्सा आता था। एक दिन वह बोली- ''जाओ, इसे बाहर छोड़कर आओ, नहीं तो मैं ही इसे कहीं फेंक दूँगी।''

माँ का गुस्सा देख टुकटुक छुटकी को पास के बगीचे में छोड़ आई। रात में कुत्तों के भौंकने की आवाज सुनकर छुटकी डर जाती है और झाड़ियों में छिपने का प्रयास करती, पर वहाँ कंकड़-पत्थर के बीच उसके पाँव में चोट लग जाती। इधर रात भर टुकटुक को नींद नहीं आई, वह छुटकी के बारे में ही सोचती रही। सुबह होते ही वह दूध लेकर बगीचे में गयी, पर छुटकी वहाँ दिखाई नहीं दी। उसने छुटकी को पुकारा- ''छुटकी! छुटकी! कहाँ हो तुम?''

छुटकी एक कोने में चुपचाप बैठी थी। टुकटुक की आवाज सुनकर वह म्याऊँ-म्याऊँ चिल्लाने लगी। टुकटुक दौड़ते-दौड़ते छुटकी के पास गई। उसने देखा वह घायल थी। बिना देरी किये वह उसे अपने घर ले आई।

– भिलाई (छत्तीसगढ़)

सत्य मार्ग

– डॉ. घमंडीलाल अग्रवाल

पात्र–परिचय

नित्यानंद – गुरुदेव, आयु ६५ वर्ष।
निशांत – शिष्य, आयु १५ वर्ष।
विशाल – शिष्य, आयु १४ वर्ष।
प्रभात – शिष्य, आयु १४ वर्ष।
अनिल – शिष्य, आयु १५ वर्ष।
चार–पाँच अन्य बच्चे।

(परदा खुलता है। मंच पर आश्रम का एक कक्ष। गुरुदेव नित्यानंद अपने शिष्यों से वार्तालाप कर रहे हैं।)

गुरुदेव– (शिष्यों से) क्या आज तक सिखाए गए सभी पाठ तुम्हें याद हो गए हैं?

शिष्य– (समवेत स्वर में) हाँ, गुरुदेव।

गुरुदेव– बहुत अच्छा।

निशांत– (उत्सुकता से) क्यों न पाठों को दुहरा लिया जाए गुरुदेव?

गुरुदेव– (प्रसन्न होकर) बिलकुल ठीक कहा शिष्य!

शिष्य– हम तैयार हैं गुरुदेव।

गुरुदेव– (निशांत से) तो बताओ, पहला पाठ कौन–सा था?

निशांत– (प्रसन्न मुद्रा में) **स्वास्थ्य जागरुकता**। हमें अपने स्वास्थ्य की उचित देखभाल करनी चाहिए ताकि बीमारियाँ हम पर हमला न कर सकें। इसके लिए खान–पान संबंधी जानकारी रखनी उपयोगी होती है। यही नहीं स्वास्थ्य को बनाए रखने के लिए व्यायाम, योग व प्राणायाम भी नियमित रूप से आवश्यक रहता है।

(तालियाँ।)

गुरुदेव– वाह! बहुत खूब।

निशांत– (हाथ जोड़कर) आपके आशीर्वाद का फल है।

गुरुदेव– (विशाल की ओर मुँह घुमाकर) विशाल, तुम बताओ कि अगला पाठ क्या था?

विशाल– **कर्त्तव्यनिष्ठा**। हाँ, हमें पूरी निष्ठा के साथ अपने कर्त्तव्य का पालन करना अत्यंत आवश्यक है। माता–पिता, गुरु, समाज के लोगों व सगे–संबंधियों के साथ अपना कर्त्तव्य निभाने में ही हमारी भलाई निहित है।

गुरुदेव– बिलकुल ठीक।

(तालियों की गूँज।)

गुरुदेव– अब बारी है प्रभात की।

प्रभात– जी, गुरुदेव! (सोचते हुए।)

प्रभात– **समय–पालन**। समय किसी की प्रतीक्षा नहीं करता है, अतः हमें समय का सम्मान

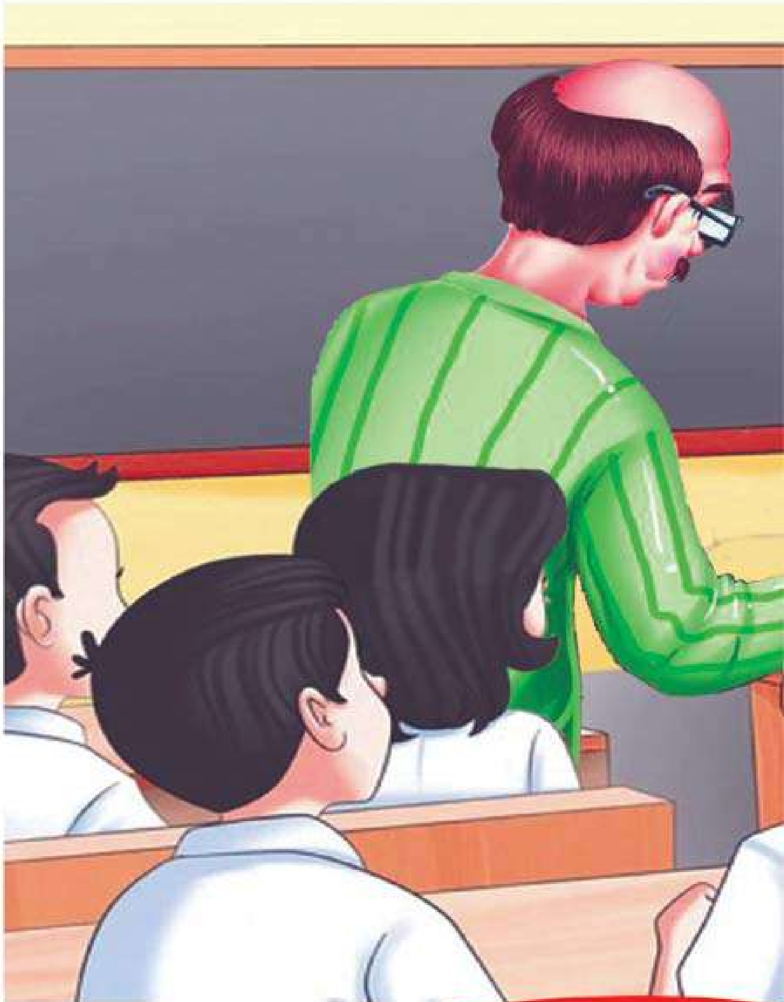

करते हुए अपने सारे काम समय पर पूरे करना चाहिए। जिसने समय खोया, वह बाद में खूब रोया। कहा भी गया है– अब पछताए होत क्या, जब चिड़िया चुग गई खेत।

(फिर से तालियाँ बजती हैं।)

गुरुदेव– प्रसन्न रहो शिष्य!

प्रभात– जी!

गुरुदेव– अनिता! तुम बताओ अगले पाठ का सार?

अनिल– ईमानदारी। ईमानदारी ऐसा गुण है जिसे अपनाने पर व्यक्तित्व में सुगंध का वास हो जाता है और व्यक्ति ऊँचा उठता जाता है। यह जीवन का नए आयाम देती है तथा हर काम को सरल बनाने में सहयोग करती है।

(तालियों की गूँज।)

गुरुदेव– वाह, शिष्य! आगे के पाठों के विषय

में भी बारी–बारी से बताओ?

निशांत– सच्चरित्रता या **शील**। मनुष्य को चरित्रवान बनना चाहिए ताकि उसे कभी नीचा नहीं देखना पड़े। कहा भी गया है– ''यदि धन गया तो कुछ नहीं गया। यदि स्वास्थ्य गया तो कुछ गया। यदि चरित्र गया तो सब कुछ चला गया।''

विशाल– आज्ञापालन। अपने से बड़ों की आज्ञा का पालन करके ही हम यश के भागी हो सकते हैं। यह दूसरों की नजरों में हमें उच्च स्थान देती है, असुविधाओं का हरण कर लेती है।

प्रभात– परोपकार। परोपकार के माध्यम हम इस लघु जीवन को सफल कर पाते हैं। हर प्राणी के साथ परोपकार करना हमारा धर्म हो, यह आवश्यक है।

अनिल– प्रेम व दया भाव। इन्हें अपनाकर सच्चा मानव बनने में पहल की जा सकती है। हर किसी के साथ प्रति प्रेम व दया दर्शाने से मनुष्य वास्तव में अच्छा मनुष्य कहलाने का अधिकारी बनता है।

निशांत– अगला पाठ था–**अहिंसा**। 'अहिंसा परमोधर्म:' के अनुसार अहिंसा मानव का परमधर्म होना चाहिए। यही वह गुण है जो संवेदनाओं को जाग्रत करता है और जीवन–शैली में सुधार लाता है।

विशाल– अनुशासन! यह मानव में पूर्णता के बीजारोपण करता है और खुशियों को भरता है। चींटियों को देखिए, हमें अनुशासन का पाठ पढ़ाती हैं। तो, हम मनुष्य अनुशासन को क्यों न अपनाएँ?

प्रभात–राष्ट्रीय स्वाभिमान। कहा भी गया है–

जिसको न निज गौरव तथा
निज देश पर अभिमान है,
वह नर नहीं, पशु निरा है
और मृतक समान है।

अनिल– आगे के पाठों में प्रमुख या– **पर्यावरण चेतना** यानी **प्रकृति–प्रेम**। इसके अलावा

स्वच्छता भी आवश्यक है।

गुरुदेव– (प्रसन्न भाव से) वाह शिष्यों! मुझे अब विश्वास हो गया है कि यहाँ से प्रस्थान करके समाज में तुम सभी एक नया आदर्श प्रस्तुत करोगे।

(रुककर।)

गुरुदेव– अब बारी है आखिरी पाठ की। लेकिन....।

शिष्य– लेकिन क्या ?

गुरुदेव– तुम सबको एक काम करना पड़ेगा ?

शिष्य– कौन–सा काम ?

गुरुदेव– भिक्षा का। तुम सभी निकट के गाँव से जाकर भिक्षा लेकर आओ।

शिष्य– (हामी भरते हुए) ठीक है।

(निशांत, विशाल, प्रभात और अनिल नामक चारों शिष्य निकट के गाँव में भिक्षा माँगने को चल देते हैं।)

गुरुदेव– (अन्य बच्चों को पास बुलाकर) तुम सबको भी आश्रम के नियमों का पालन करना पड़ेगा। क्या तुम सभी तैयार हो ?

नए बच्चे– जी! हम तैयार हैं।

गुरुदेव– जीवन में सादगी का समावेश हो और विचारों में महानता। तभी, यह जीवन सार्थक बनाया जा सकता है। क्रोध, मोह, लोभ, लालच, स्वार्थ आदि से भी तुम्हें किनारा पड़ेगा।

नए बच्चे– हाँ, गुरुदेव! हम आश्रम में रहकर इन सभी विकारों का परित्याग भी करेंगे।

गुरुदेव– (हँसकर) अच्छी बात है। तो, कल से तुम्हारी शिक्षा प्रारंभ हो जाएगी। आज विश्राम करो।

(इतनी देर में चारों शिष्य भिक्षा लेकर वापस आश्रम में पहुँचते हैं।)

शिष्य– गुरुदेव! हम भिक्षा ले आए हैं आपकी आज्ञानुसार।

गुरुदेव– (पूछते हुए) तुम सबने भिक्षा माँगते हुए क्या कहा था ? अलग–अलग बताओ ?

निशांत– मैंने कहा कि मुझे अपने गुरुदेव के लिए भिक्षा चाहिए।

विशाल– मैंने कहा कि मुझे अपने अन्य शिष्यों के लिए भिक्षा चाहिए।

प्रभात– मेरा कथन था– आश्रम के अतिथियों के लिए।

अनिल– मैंने कहा कि अपने लिए तथा आश्रम के जीव–जंतुओं के लिए।

(गुरुदेव हँसते हुए बोलते हैं।)

गुरुदेव– तुम सभी ने भिक्षा माँगते समय **'सत्य–मार्ग'** नहीं अपनाया बल्कि झूठ का सहारा लिया।

(क्षमा माँगते हुए।)

शिष्य– आगे से ऐसा नहीं करेंगे।

गुरुदेव– बस, यही है आज का पाठ यानी अंतिम पाठ। जीवन में **सच्चाई** पर अडिग रहना चाहिए। हाँ, इस राह में काँटे भी हैं, रोड़े भी हैं। किन्तु सत्य–मार्ग फूलों की सुगंध से भरा हुआ होता है जो तुम्हारी छवि को सुंदर बनाता है। जानते हो कि राजा हरिश्चन्द्र को 'सत्यवादी' क्यों कहते हैं? वे आजीवन सत्य मार्ग पर ही चले थे। भगवान राम और हमारे महात्मा गाँधी ने भी सत्य–मार्ग को अपनाया। अनेक यातनाएँ भी मिलीं इनको, कष्ट सहे फिर भी वे इससे हटे नहीं।

(शिष्य गुरुदेव के चरणों में गिर पड़ते हैं।)

शिष्य– आप जैसे गुरु के सान्निध्य में हमारा जीवन धन्य हो गया है।

गुरुदेव– प्रसन्न रहो।

(शिष्यों ने गुरुदेव का आशीर्वाद लिया और वहाँ से चल दिए।)

(परदा गिरता है।)

– गुरुग्राम (हरियाणा)

लघुकथा

पंखुड़ियों की व्यथा

– मीरा जैन

धरती पर पड़ी गुलाब की पत्तियों की आँखों में आँसू देख काँटे से रहा नहीं गया उसने सांत्वना देते हुए प्रश्न किया– ''हे, अप्रतिम सुंदर पत्तियों! कल तक तो तुम प्रसन्नता से झूमती हुईं इठला रही थीं आज तुम्हारी आँखों में आँसू, क्या बात है?''

भूमि पर पड़ी एक गुलाब की पंखुड़ी ने बहुत ही वेदनापूर्ण स्वर में व्यथित हो उत्तर दिया– ''काँटे भाई! कल तक हम बहुत प्रसन्न थीं क्योंकि जहाँ माली बाबा ने अन्य फूलों को बड़ी आसानी से तोड़ लिया था वहीं हमने स्वयं को पत्तों के बीच छिपा टूटने से बचा लिया, अपनी इस सफलता पर हम इठला रहीं थीं किन्तु आज स्वयं ही हमारा अंत हो गया और हम जमीन पर आ गिरीं। अब जिसे देखो वही हमें रौंदकर जा रहा है हमारा कोई सम्मान नहीं, उन गुलाब के फूलों को देखो कितनी सुन्दरता से सम्मानपूर्वक पूजा की थाल में सजे हैं जिन्हें माली बाबा तोड़कर ले गए थे। अब हमारी समझ में आ गया है कि सम्मान उन्हीं का होता है जो दूसरों के काम आते हैं।'' **– उज्जैन (म. प्र.)**

कविता

चंदा मामा मुँह धोने आता

– अशोक जैन, भवानी मण्डी (राजस्थान)

शांत तालाब के पानी में
देख चाँद की परछाई,
बबलू जी यह लगे सोचने–
कैसा अचरज है भाई!

घर आकर बोले अम्मा से
नभ में क्या सूखा है पड़ता?
चँदा मामा को मुँह धोने
धरती पर क्यों आना पड़ता?

रोशनी से आग

– रजनीकांत शुक्ल

देश का दक्षिणी समुद्र तटीय राज्य केरल बहुत ही सुंदर राज्य है। सदियों से दूर–दूर देशों तक यहाँ के मसालों का व्यापार होता रहा। इसी राज्य का एक जिला है कोट्टायम। यह वही स्थान है जहाँ मलयालम भाषा की पहली प्रिंटिंग प्रेस वर्ष १८२० में लगाई गई थी जिसे लगाने वाले थे बैंजामिन बैली।

जिला मुख्यालय से मात्र बाहर किलोमीटर दूर कुमारकम नामक गाँव में खूबसूरत पक्षी अभ्यारण्य है। वेम्बानद झील के किनारे बसा यह चौदह एकड़ में फैला हुआ अभ्यारण्य पक्षी विज्ञानियों के लिए स्वर्ग है। कोट्टायम के आसपास की नदियों और नहरों का पानी इस झील को समृद्ध करता है। ओणम के पर्व पर एक साथ सैकड़ों लोगों की नौकायन प्रतियोगिता में एक साथ चप्पू चलाने का दृश्य तो दशकों के मन को मुग्ध कर देता है।

जिले में पैराथोड़ नामक कस्बा है। मलयालम में पैरा पत्थर को कहते हैं और थोड़ का अर्थ है छोटी नदी या नाला। यहाँ की मिट्टी की खुदाई में अभी भी पुरातत्व के महत्व की वस्तुएँ जैसे मिट्टी के बर्तन, तलवारें तथा अन्य कलाकृतियाँ मिल जाती हैं जो बताता है कि कभी इस क्षेत्र में नवपाषाण काल की कोई विकसित सभ्यता रही होगी।

२६ जुलाई १९९९ की बात थी। शाम को छः बजे का समय था। वह वहाँ के रहने वाले श्री पविथरन का छोटा सा घर था। वैसे तो अभी वातावरण में काफी प्रकाश था लेकिन चूँकि उनका घर एक ऐसे स्थान पर था जिसके आसपास रबर के पेड़ों को लगाया गया था। उनके घने पत्तों की छाया के कारण उनके घर में समय से पहले ही अँधेरा हो गया था।

श्री पविथरन और उनकी पत्नी दोनों को उस समय नदी से पानी लेने जाना था। घर में उनका सात वर्ष का पुत्र विष्णुविलास पविथरन और साढ़े तीन वर्ष की बेटी लक्ष्मी थी। उन्होंने विष्णु से कहा कि वे दोनों नदी से पानी लेने जा रहे हैं। तब तक वह घर में ही रहे बैठकर अपनी पढ़ाई करें। अँधेरा हो गया है इसलिए उन्होंने उसके लिए मिट्टी के तेल का लैम्प जला दिया। फिर वे दोनों नदी से पानी लेने के लिए चल दिए।

माता और पिता के जाने के बाद विष्णु ने अपने विद्यालय के बस्ते से पुस्तक निकाली और एक अच्छे बच्चे की तरह वहाँ बैठकर पढ़ाई करने लगा। उसकी बहन लक्ष्मी उस समय दूसरे कमरे में थी। उसने दूसरे कमरे में ही एक अलग लैंप जला लिया और एक रंगीन चित्रों वाली पत्रिका उठाई और उसे पढ़ने लगी। वह बार–बार उस पत्रिका के पन्ने पलटती और उसमें बने चित्रों को देखती। वह अभी बहुत छोटी केवल साढ़े तीन वर्ष की थी।

नन्हें बच्चों की प्रवृत्ति के अनुसार लक्ष्मी भी अधिक देर तक एक स्थान पर बैठी नहीं रह सकती थी। बार-बार इधर-उधर चलने-फिरने से लैंप की लौ भी उसके साथ-साथ इधर-उधर हो रही थी। उसे उस समय लापरवाही में ध्यान ही नहीं रहा कि कब उस लैंप की लौ ने उसकी फ्रॉक के एक किनारे को छू लिया। अनजाने में लक्ष्मी उसी प्रकार पत्रिका लेकर लैंप के आस-पास उछलती कूदती रही।

जब आग ने कुछ तेजी पकड़ी और फ्रॉक के अधिक बड़े भाग को अपनी लपेट में ले लिया तब उसे इसका पता चल पाया। अपनी पहनी हुई फ्रॉक में लगी आग देखकर लक्ष्मी एकदम से घबरा गई। उसे समझ में नहीं आया कि वह क्या करें? उसने आग से दूर हटकर स्वयं को बचाने का प्रयत्न किया किन्तु इससे वह लैंप से तो दूर हो गई लेकिन पहनी हुई फ्रॉक का वह क्या करती।

जब उसे कुछ समझ नहीं आया तो वह

चिल्लाने लगी- ''भैया! भैया! जल्दी आओ। मुझे बचाओ।''

विष्णु को एकदम से समझ नहीं आया कि लक्ष्मी उसे क्यों बुला रही है? ''आता हूँ।'' उसने कुछ अनमनेपन से उत्तर दिया। किन्तु जब एक बार फिर लक्ष्मी की डरी हुई आवाज उसे सुनाई दी तो वह तेजी से उठा और लक्ष्मी की आवाज की दिशा की ओर दौड़ पड़ा। कमरे के अंदर पहुँचते ही उसने देखा कि घबराई हुई लक्ष्मी कमरे में इधर-उधर भाग रही है और उसकी पहनी हुई फ्रॉक में आग लगी हुई है।

लक्ष्मी की ऐसी परिस्थिति देखकर विष्णु पहले तो घबरा गया किन्तु फिर वह तेजी से आगे बढ़ा और उसे पकड़कर अपने हाथों से ही उसकी जलती फ्रॉक की आग को बुझाने लगा। किन्तु आग की लपट तेज थी उसके पहले प्रयास सफल नहीं हुए। अब उसने लक्ष्मी को तेजी से अपने साथ जमीन की ओर खींचा जिससे वे दोनों ही जमीन पर लौट गए।

अब विष्णु ने फिर से उसे उलटते-पुलटते आग बुझाने का प्रयत्न किया। इस बार उसका प्रयास रंग लाया और फ्रॉक में लगी जलती आग बुझ गई। लेकिन नीचे गिरने-गिराने के क्रम में पता नहीं विष्णु का या लक्ष्मी के शरीर का कोई भाग लैंप से टकरा गया और लैंप कमरे के फर्श पर लुढ़क गया। उसके लुढ़कते ही उसके अन्दर भरा मिट्टी का तेल सारे फर्श पर बिखर गया और उसमें आग लग गई।

आग को फैलते देखकर विष्णु तुरन्त फुर्ती से उठा और कमरे के एक किनारे पर रखे पानी से भरे जग को लाकर उसे फर्श और लैंप की आग पर डाल दिया। जिससे वह आग तुरन्त बुझ गई। वरना वहाँ कोई बहुत बड़ा हादसा हो सकता था। वह आग अगर बुझाई न जा पाती तो पूरे घर को अपनी चपेट में ले सकती थी। हाँ, किन्तु इस प्रयास में नन्हें विष्णु का गाल का कुछ भाग जल गया और लक्ष्मी के कंधों और पेट के कुछ भाग जलती आग के संपर्क में आने से जल

गए थे और उसमें घाव भी हो गए थे।

कुछ ही देर में विष्णु के माँ–पिताजी जब नदी से पानी लेकर घर में आए तो उन्होंने अन्दर के कमरे को बुरी तरह अस्त–व्यस्त और अपने दोनों बच्चों को घायल देखा। सारी जानकारी मिलने पर उन्होंने तुरन्त दोनों बच्चों को प्राथमिक चिकित्सा दिलवाई। पास–पड़ोस के लोगों ने भी विष्णु की सूझबूझ की प्रशंसा की। माता–पिता की अनुपस्थिति में विष्णु ने जिस प्रकार समझदारी से अपनी नन्हीं बहन की जान बचाई और घर को भी आग से बचाया यह सरल काम नहीं था।

संकट के समय अच्छों–अच्छों के हाथ–पाँव फूल जाते हैं और कुछ समझ में नहीं आता है कि हम ऐसी स्थिति में क्या करें? ऐसे में विष्णु ने न केवल बहन के कपड़ों में लगी आग को साहसपूर्वक बुझाया बल्कि लैंप का तेल फैलने पर उसे पानी से बुझाया भी। जिसके कारण उसका सारा घर जलने से बच गया। केवल सात वर्ष के विष्णु की ऐसी समझदारी के कारनामे को लोगों ने उचित माध्यम से दिल्ली तक पहुँचाया तो विष्णु का नाम राष्ट्रीय बाल वीरता पुरस्कार के लिए चुन लिया। वर्ष २००१ में गणतंत्र दिवस की पूर्व संध्या को देश की राजधानी दिल्ली में प्रधानमंत्री अटलबिहारी वाजपेयी जी ने देश के चुने हुए अन्य बहादुर बच्चों के साथ जब विष्णु को प्रधानमंत्री निवास में राष्ट्रीय बाल वीरता पुरस्कार प्रदान किया तो वह मारे प्रसन्नता के झूम उठा।

नन्हे मित्रों,

जब भी जैसे जहाँ रहो तुम, हो सतर्क हर दम,
जिसको भी हो जहाँ जरूरत मददगार हो, तुम,
अवसर पर चूकना न बिलकुल दिखलाना दमखम,
मन का अगर हौसला जिन्दा, तो जिन्दा हैं हम।

– नई दिल्ली

आपकी पाती

आदरणीय
सम्पादक महोदय
सादर नमन!

देवपुत्र मार्च अंक अतिशय निराला,
होली के रंगों ने मन को रंग डाला।
सम्पादक जी की भैया–बहिनों से बात,
इच्छाशक्ति–क्रियाशक्ति देती नवप्रभात।
कविताएँ भावपूर्ण, मोहक भरपूर,
कहानियाँ प्रेरक, हताशा करतीं दूर।
अनुपम है 'बालसाहित्य की धरोहर'
बालसाहित्यकारों का देती परिचय मनोहर।
बढता क्रम, चित्रकथा और विज्ञान व्यंग,
बालमन में जगाते हर्षोल्लास, उमंग।
पत्रिका का प्रत्येक अंक शिक्षाप्रद, सुहावन,
रंगीन चित्रों से सुसज्जित कृति अति पावन।

मुझे अपने एक मित्र से देवपुत्र पत्रिका पढ़ने को मिली जिसे देखकर मैं हैरान रह गया इतने सुंदर चित्र और कहानियाँ, चित्र ऐसे जो मन को मोह ले और बचपन की उन मीठी यादों को वापिस ला दे।

देवपुत्र पत्रिका की एक और विशेष बात जो मैंने देखी यहाँ प्रत्येक धर्म का सम्मान किया जाता है किसी का मजाक नहीं बनाया जाता। प्रथम पृष्ठ से लेकर अंत तक यह पत्रिका आज के समय में मेरे लिए तो अद्भुत है।

अंत में सभी माता–पिता से प्रार्थना करता हूँ कि देवपुत्र पत्रिका को अपने बच्चों को अवश्य लगवा कर दीजिए। इसका मूल्य बहुत कम है किन्तु इसका ज्ञान ऐसा है जिसका कोई मूल्य नहीं।

–गुरमुखसिंह,
फिरोजपुर (पंजाब)

खेत भरे हैं पानी से

– श्यामसुन्दर श्रीवास्तव 'कोमल'

मेंढक और मेंढकी दोनों,
मुक्त हुए हैरानी से।
देखा चारों ओर उन्होंने,
खेत भरे हैं पानी से।।

मेंढक बोला सुनो मेंढकी,
सुर लय ताल मिला लें।
ऐसा मौसम कहाँ मिलेगा,
झूमें, नाचें, गा लें।

रगड़-रगड़कर खूब नहा लें,
इस मिट्टी मुल्तानी से।
देखा चारों ओर उन्होंने,
खेत भरे हैं पानी से।।

मेंढक उछला खूब छपा छप,
खुश हो फुदक-फुदक कर।
उधर मेंढकी झूम-झमा-झम,
नाची थिरक-थिरक कर।

दोनों सुर में तान छेड़ कर,
गाते मीठी बानी से।
देखा चारों ओर उन्होंने,
खेत भरे हैं पानी से।।

टर्र-टर्र के मीठे स्वर को,
सब पहचान गये हैं।
बड़े-बड़े संगीत गवैये,
लोहा मान गये हैं।।

खुद अपना स्वर ना पहचाने,
अब तक हम नादानी से।
देखा चारों ओर उन्होंने,
खेत भरे हैं पानी से।।

– लहार (म. प्र.)

बात बन गई

– डॉ. कुसुम रानी नैथानी

सुबह का समय था। लता नहा धोकर आँगन में आई तो उसे बेटे के कमरे से जोर से आती आवाज सुनाई दी। वह झट से उसके कमरे में पहुँची तो वहाँ का दृश्य देखकर सन्न रह गई। विवेक अपने सात वर्ष के बेटे दीपक पर बुरी तरह बरस रहा था। गुस्से में उसने बेटे के गाल पर एक चांटा जड़ दिया। लता उसके सामने आकर बोली– ''यह क्या कर रहा है विवेक?''

''आज तुम बीच में कुछ मत बोलो अम्मा। तुम्हारी वजह से दीपक इतना बिगड़ गया है।''

''हुआ क्या है यह तो बताओ?''

''तीन दिन से यह विद्यालय नहीं गया है। आज भी कहता है विद्यालय नहीं जाऊँगा। तुम ही बताओ मैं क्या करूँ?'' उसकी बात सुनकर लता चुप हो गई। उसने दीपक को देखा तो वह झट से दादी से लिपट गया। उसे प्यार से सहलाते हुए लता बोली– ''चुप हो जा मत रो मत। चल मैं तुझे शाला छोड़कर आती हूँ।''

''दादी! मुझे शाला नहीं जाना।''

''तुम्हारे मित्र सब शाला जाते हैं। तुम्हें भी शाला जाना चाहिए। वहाँ जाकर तुम पढ़ना–लिखना सीखोगे और एक दिन बड़े आदमी बनोगे।''

''मुझे नहीं पढ़ना दादी!''

''ऐसा नहीं कहते बेटा! पढ़ाई लिखाई हर बच्चे के लिए आवश्यक होती है।''

विवेक को क्रोध आ रहा था। वह बोला– ''अम्मा! अब तुम जानो और दीपक जाने। मुझे आज यह घर पर दिखाई नहीं देना चाहिए।'' कहकर वह पैर पटकता हुआ घर से बाहर चला गया।

दीपक की माँ दिशा पहले ही काम पर चली गई थी। लता दीपक को लेकर आँगन में आ गई। उसने कहा– ''दीपक! तुम्हें अपने पिताजी को इस प्रकार नाराज नहीं करना चाहिए।''

''मुझे शाला जाना अच्छा नहीं लगता दादी! वे मुझे जबरदस्ती शाला भेजते हैं।''

''दिनभर घर पर ही रहकर तुम क्या करोगे? तुम्हारी माँ भी काम पर चली जाती है और पिताजी भी। मुझे भी काम पर जाना होता है। दीपक तुम अकेले किसके साथ रहोगे?''

''मुझे अपने घर पर किसी के साथ की आवश्यकता नहीं है।''

''तुम्हारे सारे मित्र शाला चले गए हैं। तुम घर पर रहकर क्या करोगे?'' लता ने पूछा।

''मैं साइकिल चलाऊँगा दादी! मुझे वह बहुत अच्छा लगता है।'' आँगन में खड़ी साइकिल पर चढ़ते हुए दीपक बोला। साइकिल देखते ही वह अपनी डाँट और मार भूल गया और आराम से आँगन में साइकिल चलाने लगा। लता को समझते देर न लगी कि इसी के चक्कर में वह शाला नहीं जाना चाहता। विवेक की बात अपनी जगह ठीक थी लेकिन बच्चे के साथ मारपीट क्रोध इस समस्या का हल नहीं थे। कुछ देर पहले

पिताजी से थप्पड़ खाने के बाद भी दीपक पर उसका कोई प्रभाव नहीं दिखाई दे रहा था। वह आराम से साइकिल के साथ खेल रहा था। लता ने कुछ सोचा और बोली– ''जल्दी से तैयार हो जाओ। मैं तुम्हें छोड़कर आती हूँ।'' शाला के नाम से दीपक का चेहरा उतर गया।

''तुम्हें मेरी बात माननी होगी दीपक। मैंने तुम्हें यह साइकिल इसीलिए नहीं दी कि इसके कारण तुम पढ़ाई छोड़ दो।''

''दादी! मुझे साइकिल चलाने दो न।''

''साइकिल तुम शाला से आकर भी चला सकते हो। देख रही हूँ जब से तुम्हारे पास साइकिल आई है तुम रात दिन इसी के पीछे पड़े रहते हो। तुम्हें और किसी चीज का भान नहीं रहता।''

''दादी! मुझे साइकिल से खेलना अच्छा लगता है।''

''दीपक! तुम्हारे साथ के सारे बच्चे पढ़–लिखकर अगली कक्षा में चले जाएँगे। तुम्हें अच्छा लगेगा तुम उसी कक्षा में रहोगे।''

दादी की बात सुनकर दीपक चुप हो गया है। दादी ने उसे समझाया और बोलीं– ''तुम्हें साइकिल उतने घंटे के लिए ही चलाने को मिलेगी जितने घंटे तुम शाला में रहोगे। यदि तुम शाला नहीं जाओगे तो तुम्हें साइकिल चलाने के लिए नहीं मिलेगी। मैं अब उस पर ताला लगा कर रखूँगी।'' दीपक ने चुपचाप सिर झुका लिया। अब पढ़ाई से बचने का कोई चारा नहीं था। शाला में आज उसका मन अधिक नहीं लगा लेकिन मजबूरी थी। दोपहर में शाला से घर आकर उसने भोजन किया और उसके बाद झटपट गृहकार्य करने बैठ गया। उसकी दृष्टि घड़ी पर थी। ठीक तीन बजे लता ने उसे साइकिल की चाबी थमाई और उसके बाद वह अपने काम पर चली गई। दीपक शांति से साइकिल चलाने लगा।

शाम को विवेक घर आया तो दीपक चहक कर बोला– ''पिताजी! मैं शाला गया था।''

यह सुनकर विवेक को अपने कान पर विश्वास नहीं हुआ। दीपक ने अपनी कॉपी लाकर पिताजी को दिखाई तब जाकर उन्हें विश्वास हुआ। विवेक को पछतावा हो रहा था कि उसने बेकार में दीपक पर हाथ उठाया। शाम को लता घर लौटी तो विवेक को प्रसन्न देखकर समझ गई कि दीपक ने उसे सब कुछ बता दिया है। विवेक को समझ नहीं आ रहा था कि यह चमत्कार कैसे हो गया।

लता बोली– ''बेटा! इसमें दीपक की अधिक गलती नहीं है। मैंने ही उसे साइकिल लाकर दी थी। वह कई दिनों से इसकी हठ कर रहा था। साइकिल के कारण उसका ध्यान पढ़ाई से भटक गया। मैंने साइकिल चलाने के घंटे निश्चित कर दिए तो उसे शाला जाना ही पड़ रहा है। मुझे आशा है धीरे–धीरे उसका मन पढ़ाई में भी लगने लगेगा।''

लता की बात सच निकली। शाला में बच्चों के साथ दीपक का मन लगने लगा है। अब किसी को उससे शिकायत नहीं थी।

– चूखूवाला (उत्तराखण्ड)

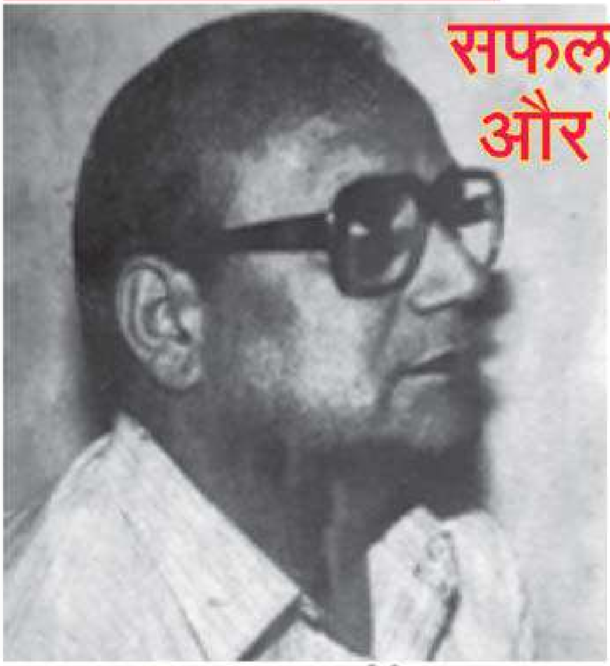

सफल बाल कवि–कथाकार–चित्रकार और संपादक : शंभूप्रसाद श्रीवास्तव

प्रस्तोता – डॉ. नागेश पांडेय 'संजय'

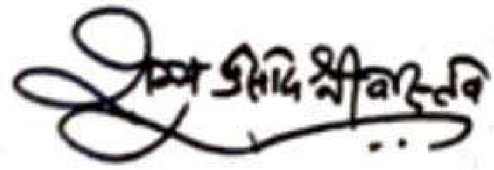

प्यारे बच्चो!

शंभूप्रसाद जी का जन्म १५ जून १९३६ को वाराणसी के औरंगाबाद मोहल्ले में भैरोंप्रसाद श्रीवास्तव के पुत्र के रूप में हुआ। जब इनकी अवस्था मात्र तेरह वर्ष की थी तो इनके पिताजी का एक सड़क दुर्घटना में निधन हो गया।

साहित्य सृजन की प्रेरणा इन्हें अपने हिंदी शिक्षक वासुदेव उपाध्याय से मिली। उनके कहने पर इन्होंने कक्षा ६ के अध्ययनकाल में वसंत पर कविता लिख डाली थी। उनकी माता लोककथाओं का विश्वकोष थीं। माँ कहतीं थीं जो मैं तुझे सुनातीं हूँ, उसे लिखकर दिखाया करो। सुनी हुई बात यदि लिख लो तो कभी नहीं भूलतीं। वर्ष १९५० में माँ से सुनी कहानी को इन्होंने 'मगर और स्यार' शीर्षक से पद्यकथा के रूप में लिखा जो १९५१ में भारत सरकार की पत्रिका 'बाल भारती' में प्रकाशित हुई। फिर तो इनके सृजन को जैसे पंख लग गए। तत्कालीन बाल पत्रिकाओं में उनकी रचनाएँ सम्मानपूर्वक प्रकाशित होने लगीं। रानी बिटिया (वाराणसी) और शेर सखा (कोलकाता) जैसी का संपादन कर इन्होंने बाल पत्रकारिता के क्षेत्र में कीर्तिमान रचा।

वाराणसी में उन्हें सरकारी नौकरी मिल गयी थी किन्तु स्वाभिमान के चलते उसे छोड़ दिया। १९५९ में वे कोलकाता चले गए और सुप्रसिद्ध समाज सेवी पुष्करलाल केडिया की प्रेरणा से बाल साहित्य के क्षेत्र में अद्भुत कार्य किया। बाल कविता, कहानी, नाटक, संगीत रूपक, चित्रकला आदि विधाओं में उत्तम लेखन किया। लगभग डेढ़ सौ आवरण और ३०० पोस्टर बनाए। केडिया जी ने १९६४ में इनके संपादन में 'शेर सखा' पत्रिका का प्रकाशन प्रारम्भ किया। इसका विश्व बालक अंक आज भी मील के पत्थर जैसा है, जिसमें ४० देशों के बच्चों से संबंधित सामग्री प्रकाशित हुई थी।

उन्होंने सुपर्णा नामक संस्था भी बनाई। इससे बंगाल में हिंदी बाल साहित्य को प्रचुर प्रोत्साहन मिला।

शम्भूप्रसाद श्रीवास्तव की प्रमुख बालोपयोगी कृतियाँ हैं– बजे एकता का एकतारा, हँसते–हँसते जीना सीखें, हमें नया समाज दो, देशराग, मीठे हैं सारे त्योहार, आओ चुग में मोती सारे, टॉफी से भी मीठे गीत, कथा मुक्तावली, प्रेरक पद्य कथाएँ (बाल कविता संग्रह), हमें नया समाज दो, हम बेटियाँ इस देश की (बालगीत), अक्बड़–बक्कड़–बम्बे–बो, चूँ–चूँ, रसमलाई (शिशु–गीत), अचम्भों का जुलूस (बाल उपन्यास), अल्लो–बल्लो, बहुत दिनों की बात है, सरस कहानियाँ (दो भाग) (बाल–कथाएँ), हम चमन के फूल, आमारा एक बागानेर फूल (हम चमन के फूल का बांग्ला अनुवाद), अंगों की हड़ताल (बाल नाटिका)

बाल साहित्य की उल्लेखनीय सेवा हेतु उन्हें भारतीय बाल कल्याण संस्थान, कानपुर जावित्री देवी सम्मान, शकुन्तला सिरोठिया पुरस्कार इत्यादि अनेक पुरस्कार सम्मान मिले। कोलकाता में ५ मई १९९३ को उनका निधन हो गया। आइए, उनकी कुछ बेजोड़ रचनाओं को आनंद लेते हैं।

कहानी

लाल जूता

लाल जूता बोलता बहुत था। जब वह चलता तो उसकी चरमराहट सुनकर लोग समझ जाते कि लाल जूता आ रहा है। शैतानी भी उसमें कूट-कूट कर भरी हुई थी। उसे किसी के पाँवों के तलुवे चाटना बिलकुल पसंद नहीं था। जब उसने अपने मालिक के पाँवों में बार-बार दाँत गड़ाना शुरू किया तो उस बेचारे ने तंग आकर लाल जूते को अपने मकान के उस कोने में फेंक दिया, जहाँ बेकार और टूटी-फूटी चीजें रखी जाती थीं।

अब तो लाल जूते की बोलती बंद हो गई। उसने कभी सपने में भी नहीं सोचा था कि उसे किसी कबाड़ खाने में पड़े-पड़े सड़ना होगा। एक दिन वह गुमसुम होकर न जाने किन विचारों में खोया हुआ था। अचानक उसके पास पड़ी हुई टूटी कुर्सी बोल उठी- ''लाल जूते। कई दिनों से सोच रही हूँ कि तुमसे बातें करूँ। आज बिना बोले नहीं रहा गया। तुम्हारा हाल देखकर मेरा कलेजा फटता है। मैं तो लँगड़ी हूँ, किसी काम के लायक नहीं रह गई हूँ, किन्तु हाय-हाय! तुम तो अच्छे-भले हट्टे-कट्टे और देखने में सुन्दर हो। तुम यहाँ कैसे आ गए? यह जगह तो मुझ जैसी टूटी-फूटी और बूढ़ी चीजों का आश्रम है।''

टूटी कुर्सी की ढ़ाँढ़स भरी बातें सुनकर लाल जूता बोला- ''दादी! तुमने जिन्दगी भर दूसरों की सेवा की। सबको आराम पहुँचाया, मगर जब तुम्हारी टाँग टूट गई तो तुम्हें लाकर फेंक दिया गया। जब मतलबी लोगों की सेवा करने का यही इनाम मिलने वाला है तो क्यों बेकार जिन्दगी बरबाद की जाए? मैंने अक्ल से काम लिया और पहले ही बेकार चीजों में नाम लिखाकर यहाँ चला आया। मैं खानदानी जूता हूँ। मेरे बाप-दादे राजाओं और नवाबों के यहाँ बड़ी इज्जत पा चुके हैं। मेरा भाग्य खराब है जो मैं मामूली किस्म के लोगों के पल्ले पड़ गया।''

टूटी कुर्सी यह सुनकर अवाक् होकर लाल जूते का मुँह ताकने लगी। उसने उस चालाक और घमण्डी से कहा- ''यहाँ तुम नहीं रह सकोगे। दो-चार दिनों में ही तुम्हारा दम घुटने लगेगा।''

लाल जूता बोला- ''जो होगा, देखा जायेगा। रोज की भागदौड़ और हड्डी तोड़ मेहनत से तो जान बचेगी। मुझे इसी में संतोष है।''

कई सप्ताह बीत गए। एक दिन एक चुहिया कहीं से आई। लाल जूता गहरी नींद में सो रहा था। चुहिया ने डरते-डरते उसे धीरे से झकझोर कर जगाया।

इससे पहले कि लाल जूता उस पर बरस पड़ता, चुहिया गिड़गिड़ा कर बोली– ''बड़े भैया! क्षमा करो, मैंने तुम्हारी नींद खराब कर दी। मैं तुम्हारे पास एक फरियाद लेकर आई हूँ। मैं माँ बनने वाली हूँ। एक मोटी काली बिल्ली हाथ धोकर मेरे पीछे पड़ी है। अगर तुम कुछ दिनों तक अपनी छत्र–छाया में रहने दो तो मैं तुम्हारा उपकार कभी नहीं भूलूँगी। बच्चा पैदा होते ही मैं चली जाऊँगी।''

चुहिया की बातों का लाल जूते पर कोई असर नहीं हुआ। उसने इतनी जोर से डाँटा कि वह डर के मारे उछल पड़ी। लाल जूते ने बिगड़कर कहा– ''भाग जा यहाँ से। बच्चा पैदा करना है तो कहीं और चली जा। इन फालतू झंझटों को मोल लेने के लिये मैं ही रह गया हूँ क्या?''

चुहिया मुँह लटकाए लौट गई। टूटी कुर्सी चुपचाप सारा तमाशा देख रही थी। उसे लाल जूते का यह भद्दा बर्ताव अच्छा नहीं लगा। वह बोली–''लाल जूते! गरीब चुहिया मुसीबत में थी। तुमने उसे डाँटकर भगा दिया। अगर उसकी मदद कर देते तो तुम्हारा क्या बिगड़ जाता?''

लाल जूते ने सफाई पेश की– ''तुम तो दया–धरम के सिवा और कुछ जानती ही नहीं हो दादी!'' मतलबी लोगों को देखकर मेरा खून खौल उठता है। आखिर लोग मुझे समझते क्या हैं? आज चुहिया आई, कल कोई और आयेगा। मैंने किसी का कर्ज खाया है, जो बेगारी करता रहूँ?''

टूटी कुर्सी ने आगे कुछ नहीं कहा। वह अच्छी तरह समझ गई थी कि लाल जूता निकम्मा, कठोर और घमण्डी है।

गर्मी के दिन थे। एक दिन दोपहर के समय घर की मालकिन ने अपने कमरे की खिड़की से देखा कि एक खोमचे वाला सड़क पर नंगे पाँवों चला जा रहा था। चिलचिलाती धूप में उसको चलने में कितनी तकलीफ हो रही होगी, यह सोचकर मालकिन को उस पर बड़ी दया आई। उसने अपने नौकर को भेजकर उसे बुलवाया।

खोमचे वाला आ गया। उसके कपड़े पसीने से लथपथ थे। मालकिन ने उससे पूछा– ''तेरे पाँव इस कड़ी धूप में जलते नहीं हैं क्या?''

खोमचे वाले के सूखे चेहरे पर मुस्कुराहट आ गई। बोला– ''माँ जी! दिन भर की कमाई से जब पेट ही नहीं भरता तो जूता–चप्पल कहाँ से खरीदूँ? तपती हुई सड़क पर चलने की अब तो आदत हो गई है।''

मालिकन ने कहा– ''मेरे पास एक जोड़ी जूता है। मैंने सोचा, तुझे दे दूँ तो तेरे काम आयेगा। तू जरा ठहर, मैं अभी लेकर आती हूँ।''

यह कहकर मालकिन अन्दर गईं और लाल जूते को उठा लाईं। लाल जूता ताड़ गया कि जिस मुसीबत से उसका पीछा छूटा था, वही फिर उसके गले पड़ने जा रही थी। उसका सिर चकराने लगा।

खोमचे वाला कीमती और मजबूत जूता पाकर बड़ा खुश हुआ। उसने झट उसे पहन लिया और मालकिन को बार–बार धन्यवाद देता हुआ चला गया। दिन भर लाल जूता गली सड़कों के चक्कर लगाता रहा। वह रह–रहकर दाँत पीसता और खून के घूँट पीकर रह जाता। कई बार उसने खोमचे वाले के पाँव को काट खाने की भी कोशिश की, मगर वे इतने कड़े थे कि उसकी दाल नहीं गली।

शाम को जब खोमचे वाला फल बेचकर अपने घर लौटा तो लाल जूता अधमरा हो चुका था। उसके नये मालिक ने उसे फूस के छप्पर में टाँग दिया। सारी रात लाल जूते को नींद नहीं आई। काफी दिनों से उसके बदन में पॉलिश की मालिश भी नहीं हुई थी। उसका हर अंग दर्द के मारे फटा जा रहा था। अचानक किसी अवाज ने उसे चौंका दिया। उसने गर्दन घुमाकर देखा तो फूस का छप्पर बड़ी–बड़ी आँखों से उसे घूरता हुआ खिलखिला कर हँस रहा था।

फूस के छप्पर ने मुँह बनाकर कहा– ''सो जाओ लाल जूते, नये घर में नींद नहीं आ रही है क्या ? कहो तो लोरियाँ सुना दूँ।''

लाल जूते को फूस के छप्पर का यह मजाक बड़ा बुरा लगा। वह त्योरियाँ चढ़ाकर बोला– ''खबरदार, जो मुझसे छेड़खानी की। मैं जागूँ या सोऊँ, तुझे इससे क्या मतलब ? अपना काम कर।''

फूस के छप्पर ने कहा– ''मैं तो चौबीस घंटे अपने काम में लगा रहता हूँ। निकम्मा तो तू है, जिसे काम के नाम पर बुखार चढ़ आता है। तेरी किस्मत अच्छी है कि तुझ जैसे कामचोर, लंपट और घमंडी को अब तक किसी ने रास्ते पर उठाकर फेंक नहीं दिया।''

लाल जूता आपे से बाहर हो गया। घायल साँप की तरह फुंफकारता हुआ बोला– ''अरे ओ सड़े-गले खूसट फूस के छप्पर ! सँभालकर बातें कर, वरना तेरी जबान खींच लूँगा। तुझे क्या मालूम कि मैं क्या चीज हूँ। मैं कोई कूड़ा-करकट नहीं हूँ, जिसे सड़क पर फेंक दिया जाएगा।''

फूस के छप्पर ने बड़ी जोर से ठहाका लगाया और कहा– ''जो किसी के काम न आए उसे कोई कूड़ा-करकट नहीं तो क्या हीरा-मोती कहेगा ? तूने दूसरों को कष्ट देने, शेखी बघारने और निकम्मों की जिन्दगी बिताने के सिवा और किया ही क्या है ? मुझे देख ! इस घर ने मुझे इसलिये सिर पर उठ रखा है कि मैं इसमें रहने वाले को गर्मी, ठंडक और बरसात से बचाने के लिए स्वयं कष्ट झेलता हूँ। अपनी जिन्दगी अगर दूसरों के काम न आये तो वह बेकार है।

लाल जूते को ऐसा लगा जैसे उसके मुँह पर किसी ने कसकर तमाचा जड़ दिया हो। इससे पहले उसे किसी ने ऐसी खरी बात नहीं सुनाई थी। फूस के छप्पर ने उसकी आँखें खोल दीं। उसे अपनी गलती समझ में आ गई। वह अपनी पिछली करतूतों पर मन ही मन पछताने लगा।

सबेरा होने पर जब खोमचे वाला लाल जूते को पहनकर चलने के लिये तैयार हुआ तो फूस का छप्पर उसे देखकर मुस्कुराया। वह बिलकुल बदल चुका था।

उस दिन के बाद जब तक लाल जूते में चलने-फिरने की ताकत रही, वह अपने मालिक की सेवा करता रहा। जब खोमचे वाले ने उसे बेकार समझकर सड़क पर फेंक दिया, तब उसे एक मोची उठा ले गया। मोची ने अपनी दूकान पर ले जाकर, लाल जूते के सही-सलामत अंगों को काटकर रख लिया और उनसे कई पुराने जूतों की मरम्मत की। टुकड़े-टुकड़े हो जाने पर भी लाल जूता दूसरे जूतों को वही सीख देता रहा जो उसे काफी देर से मिली थी।

लाखों में एक

आसमान में लाखों तारे, लेकिन उनको कौन निहारे।
उगकर सारी रात चमकते, मगर अँधेरा मिटा न सकते।
एक अकेला चंदा आकर, अपनी किरणों को फैलाकर।
सबकी आँखें शीतल करता, सबके मन में अमृत भरता।
यह दुनिया भी बहुत बड़ी है, इंसानों से भरी पड़ी है।
हर कोई है नन्हा तारा, बनकर चाँद करो उजियारा।

तमाशा

राजा साहब चले बैठ कर, हाथी पर ससुराल।
तेज धूप में चलते-चलते, बुरा हो गया हाल।
हाथी ने देखा राजा को, खूब पसीना आता।
तुरत सूँड़ में पंखा पकड़ा, और पूँछ में छाता।
खूब सोच कर उसने यह, अच्छी तरकीब निकाली।
बिना टिकट का देख तमाशा, सबने पीटी ताली।

– शाहजहाँपुर (उ. प्र.)

मित्रता दिवस
चित्रकथा: देवांशु वत्स
मित्रता दिवस पर राम अपने दोस्तों के बीच...
ये लो गुल्लू!
पर सभी बच्चे हँसने लगे...
राम, ये तो सस्ती वाली टॉफियां हैं! हा हा हा!
हमलोगों ने तो महंगी-महंगी टॉफियां बांटी...
हा, हा, हा...
मैं भी महंगी टॉफियां ले आता पर...
पर क्या?
कुछ लोग बाढ़ पीड़ितों के लिए चंदा एकत्र कर रहे थे...
...मैंने अनजान दोस्तों के लिए दान कर दिया!
वाह!

जीव जन्तु पहचानें वर्षा की आहट

– दिनेश प्रताप सिंह 'चित्रेश'

आदमी ने जब खेती किसानी शुरू की, तभी से मानसून से उसका नाता जुड़ गया। मानसून का आना तब उसके लिए देव कृपा थी। उसका विश्वास था कि देव कुछ भौतिक और जैविक संकेतों के माध्यम से मानसून की दशा–दिशा का आभास कराते हैं। पिछले हजारों वर्ष के बीच यह मान्यता खण्डित नहीं हुई और अब गाँववासी अपने परिवेश में पारम्परिक संकेतों को ढूँढ़कर मानसून का पूर्वानुमान करते हैं।

भारत के अधिकांश भागों में चिड़ियों के नहाने को लेकर वर्षा का अनुमान लगाया जाता है। अगर पक्षी धूल में लोटपोट करें तो माना जाता है कि वर्षा निकट है। यह अच्छे मानसून का भी संकेत है। किन्तु पक्षी पानी में नहायें तो इसे अवर्षा का प्रतीक मानते हैं।

लोकमान्यता है कि कौवों को आने वाले मानसून का पूर्वाभास होता है और पेड़ पर अपने घोंसले ये उसी प्रकार से बनाते हैं। यदि कौवे अपना घोंसला पेड़ की ऊपरी शाखाओं पर बनायें तो यह हल्की मानसून यानी कम बरसात होने का लक्षण है। इसके विपरीत निचली शाखाओं पर बनाये गये घोंसले अच्छी मानसून का आभास देते हैं। कौवे घोंसला बनाने के लिए पेड़ के बीच की घनी शाखाओं का चुनाव करें तो मानना चाहिये कि बरसात तो अच्छी होगी, पर साथ में आँधी–तूफान भी लाएगी।

राजस्थान में गरासिया जाति के लोग अक्षय तृतीया को डसूकी चाँदनी में सोती है तो यह अच्छी बरसात की सूचना है। सोन चिड़िया के विषय में ऐसी मान्यता है कि यदि यह शनिवार को धूल में लोटपोट करे तो क्षेत्र में पूरे सप्ताह भर मानसून का जोर रहेगा। किन्तु दिन बुधवार हुआ तो लगातार तीन दिन तक वर्षा होगी। सोन चिरैया का भी पानी में नहाना मानसून के अभाव का सूचक माना जाता है।

तितोरी नामक पक्षी नदियों के किनारे उगने वाले मझोले झाड़ीदार वृक्षों पर अपने घोंसले बनाते हैं। ये जितनी ऊँचाई पर अपने घोंसले बनायें, वर्षा की आशा उतनी ही अधिक होती है। चातक पक्षी के लिए कहा जाता है कि यदि यह चोंच ऊपर किये हुए दिखे तो शीघ्र ही पानी बरसता है।

जंगली हाथियों का समूह जब अपनी सूँड़ आसमान की ओर करके तेजी से दौड़ते हैं, तो बरसात की प्रबल सम्भावना बनती है। इसी प्रकार सफेद कबूतर अपने समूह में पँक्तिबद्ध होकर ऊँचाई पर उड़ने लगते हैं तो मौसम कोई भी हो, बरसात अवश्य होती है।

चींटी, मेंढक, गौरैया और मोर ऐसे जीव हैं, जो मानसून की अल्पावधि की सूचना देते हैं। मोर का बार–बार बोलना, घंटे दो घंटे के अंदर बरसात का सूचक है। गौरैया का धूल में स्नान और ढेर सारी चीटिंयों का कतार बाँधकर ऊँचाई की तरफ जाना शीघ्र ही मूसलाधार बारिश का संकेत है। मेंढकों की टर्र–टर्र भी जल्दी ही मानसून आने का संकेत है। कुत्तों के घास खाने को बेमौसम तूफानी वर्षा का प्रतीक मानते हैं।

आज विज्ञान का युग है। मानसून का पूर्वानुमान देने वाले कई अत्याधुनिक उपकरण बन चुके हैं, किन्तु कई बार इनकी भविष्यवाणी असत्य हो जाती है। जबकि जीव–जन्तुओं के दिये गये संकेतों के गलत होने की सम्भावना बहुत कम रहती है। यह केवल जन–अनभूत विद्या ही नहीं है, विज्ञान की एक कम चर्चित शाखा (ऋतु जैविकी) भी जीव–जंतुओं में मौसम के परख की क्षमता का समर्थन करती है।

– जासापारा (उ. प्र.)

धम्मक धम्मा

– मुग्धा पाण्डेय

धम्मक धम्मा
धम्मक धम्मा
रोटी सेक रही है अम्मा
रोटी में गुड़ घी रक्खेगी,
खा, ले, बेटा, मुझे कहेगी,

धम्मक धम्मा
धम्मक धम्मा
पौधा रोप रही है अम्मा,
गमले पर एक फूल खिलेगा,
अम्मा को वह खुशियाँ देगा।

धम्मक धम्मा
धम्मक धम्मा
पापड़ सेक रही है अम्मा।
अम्मा इक मुझको भी देगी,
कुरकुर खा ले, यही कहेगी।

धम्मक धम्मा
धम्मक धम्मा
स्वेटर बना रही है अम्मा,
स्वेटर को तो मैं पहनूँगा,
अम्मा के मन को सुख दूँगा।

धम्मक धम्मा
धम्मक धम्मा
शरबत बना रही है अम्मा,
देगी मुझको भरा गिलास,
पीकर नहीं लगेगी प्यास।

– नई दिल्ली

सज्जनता की पोषाख

– डॉ. बानो सरताज

एक था चिड़ा, एक थी चिड़िया। दोनों एक–दूसरे से बहुत प्रेम करते थे। उनके यहाँ संतान के आगमन की सूचना थी। उनके आनंद का पारावार न था। जी–जान से नीड़–निर्माण में जुटे थे। थककर आराम करने के लिए वृक्ष की नीचे की टहनी पर बैठे बातें कर रहे थे।

चिड़े ने कहा, ''जब अंडों से बच्चे निकल आएँगे तब तुम पूरा दिन आराम करना। दाना–दुनका लाने का दायित्व मेरा होगा।'' चिड़िया ने कहा, ''तुम्हें भी तो आराम की आवश्यकता होगी। चिड़े ने हँस कर कहा, ''तुम्हें मुझसे अधिक आवश्यकता होगी, चलो छोड़ो... दोनों मिलकर बच्चों का पालन–पोषण करेंगे।''

''सुनो जी!'' चिड़िया ने उत्साह से कहा, ''मैं कुछ समय दूसरों को भी दूँगी। दूसरे पक्षियों के नन्हें बच्चों की भी देखभाल करूँगी।'' ''यह तो बहुत अच्छी बात है। हमें एक परिवार की भाँति मिल कर रहना चाहिए।'' चिड़े ने चिड़िया को प्रोत्साहन दिया। ''अरे! वह देखो जी! एक आदमी इसी ओर आ रहा है। चलो उधर ऊँची टहनी पर जाकर बैठें अन्यथा वह हमें मार डालेगा।'' चिड़िया भयभीत होकर बोली। चिड़े ने उस दिशा में देखा जिधर चिड़िया ने इंगित किया था, फिर बोला, ''आदमी सज्जन जान पड़ता है। उस की स्वच्छ, शुभ्र सलीके से बँधी हुई पगड़ी देखो, उजले शुभ्र वस्त्र देखो। मुख पर भी सज्जन झलक रही है। यह हमें बिना कारण क्यों मारेगा?''

चिड़े ने चिड़िया के समीप होकर उसे सांत्वना दी। उतनी देर में वह आदमी समीप आ गया था। उसने फुर्ती से तीन कमान संभाल कर निशाना साधा और तीर चला दिया। तीर चिड़े को लगा। वह धरती पर गिरा मर गया। चिड़िया ने करुण चीत्कार किया। साथी पक्षी दौड़े आए उसे पकड़ लिया। चिड़िया ने राजा के दरबार में न्याय की गुहार की। अपराध सिद्ध हो गया। राजा ने चिड़िया से कहा– ''मैं तुम्हें अवसर देता हूँ। जो चाहे तुम इस व्यक्ति को दण्ड दो।'' चिड़िया ने एक क्षण, बस एक क्षण विचार किया फिर कहा– ''मेरा चिड़ा तो मुझसे बिछड़ गया, मैंने इसे क्षमा किया बस आप इस निर्दयी से कह दें कि वह यदि शिकारी है तो शिकार पर निकलते समय शिकारियों की पोषाख पहने। सज्जनता के वेश में जंगल में न आया करें।''

– चंद्रपुर (महाराष्ट्र)

बुद्धि की परख

– चाँद मोहम्मद घोसी

ध्यान से देखकर बताओ यहाँ खड़े पक्षी का मुँह, धड़, पूँछ और पैर किन पक्षियों के हैं?

– मेड़ता सिटी (राजस्थान)

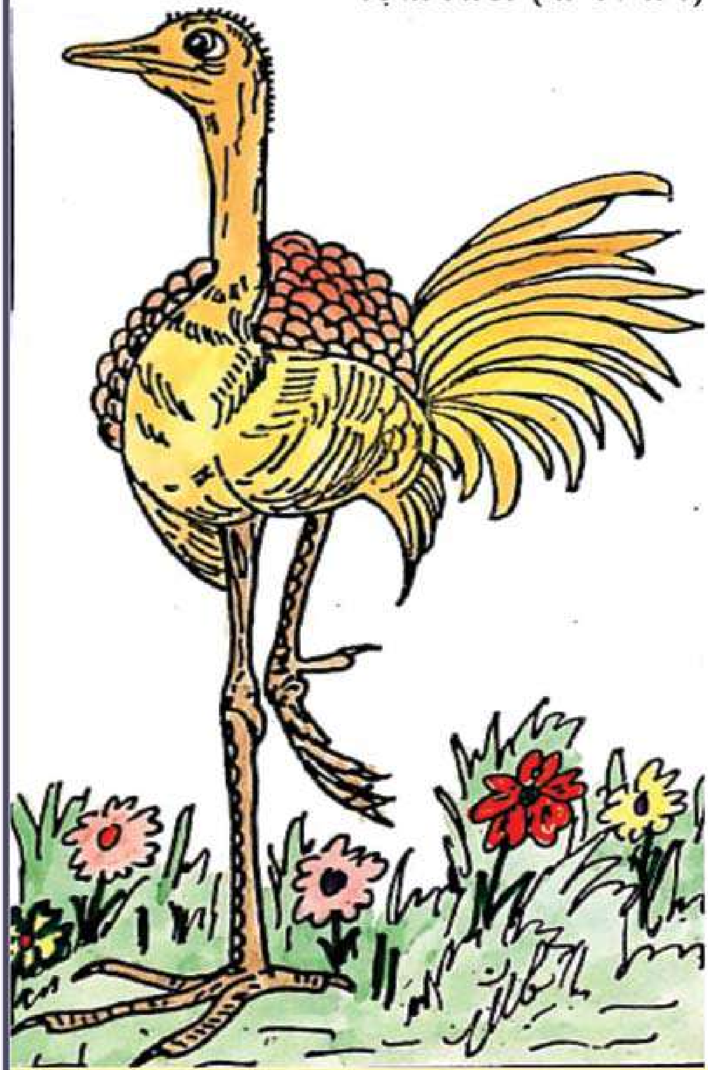

छः अँगुल मुस्कान

एक कुत्ते के मरने पर नौकर जोर–जोर से रोने लगा। मालिक ने उसे रोका और समझाया– ''अब दुःख करने से क्या लाभ?''

नौकर– ''क्या करूँ, अब मुझे जूठे बर्तन भी साफ करने पड़ेंगे।''

*****

सोनू (दूध वाले से) – तुम्हारा दूध तो खराब निकल गया।

दूधवाला – मैंने दूध तो अच्छा दिया था तुमने घर जाकर क्या किया?

सोनू– मैंने दूध को नीबू के शरबत में मिला दिया था।

*****

भिखारी – माताजी भूखे को खाना मिल जाए भगवान तुम्हारा भला करेंगे।

मालकिन – इतने हट्टे–कट्टे नौजवान होकर भीख माँगते हो? कुछ काम कर सकते हो।

भिखारी– मालकिन आप भी तो बहुत सुंदर हैं आप भी मुंबई जाकर हीरोईन बन सकती हैं।

मालकिन– ठहरो भैया! मैं अभी तुम्हारे लिए खाना लाती हूँ।

– ऋषिमोहन श्रीवास्तव ग्वालियर (म. प्र.)

आओ जानें क्या होता है अधिक मास?

बच्चो! इस वर्ष यह महिना अर्थात् श्रावण अधिक मास है। हिन्दू कालगणना के अनुसार चैत्र, वैशाख, ज्येष्ठ, आषाढ़, श्रावण, भाद्रपद, आश्विन, कार्तिक, अग्रहायण, पौष, माघ और फाल्गुन यह बारह: महिने होते हैं प्रत्येक में सामान्यत: तीस तिथियाँ और दो पक्ष होते हैं। यह सब चांद्रमास कहलाते हैं। इसी प्रकार बारह: राशियाँ होती हैं। सूर्य जब एक राशि से दूसरी राशि में प्रवेश करता है तो संक्रांति कहलाती है। किसी एक चांद्रमास में यदि कोई भी सूर्य संक्रांति न आये तो वह अधिक मास कहलाता है। लेकिन यदि एक ही मास में दो सूर्य संक्रांति आ जाए तो यह श्रय मास कहलायेगा। इस वर्ष श्रावण अधिक मास है। इसमें पहले श्रावण का कृष्णपक्ष फिर अधिक मास का शुक्लपक्ष फिर अधिक मास का कृष्णपक्ष और फिर श्रावण मास का शुक्लपक्ष। मूल मास के मध्य अधिक मास रहता है। इस बार श्रावण अधिक मास होने से चातुर्मास पाँच महिनों का होगा।

सिरदर्द का घरेलू उपचार

– उषा भंडारी

सुनीता और मीरा दोनों चचेरी बहने हैं। दोनों १२वीं कक्षा में साथ–साथ पढ़ती हैं। दोनों के घर पास–पास हैं। सुनीता के छोटे भाई का नाम राजू और छोटी बहन का नाम सीमा है। मीरा के दो भाई हैं। बड़े का नाम रोहू और छोटे का नाम दीपक है। सब बच्चे हिल–मिलकर रहते हैं। बच्चों के दादाजी काठीपुरा में रहते हैं। काठीपुरा, शहर शिवनगर से ५० किलोमीटर दूर है। दादाजी कभी–कभी शिवनगर आते रहते हैं। बच्चे दादाजी से खूब बातें करते हैं। दादाजी उनको कहानियाँ भी सुनाते। बच्चे दादाजी से मिलकर प्रसन्न होते। एक बार दादाजी सब बच्चों को अपने साथ काठीपुरा ले गए।

काठीपुरा एक छोटा–सा गाँव है। इसमें छोटे–बड़े दो सौ परिवार रहते हैं। बच्चे गाँव में दो दिन रहे। उनको लगा कि गाँव परिवार की तरह रहते हैं।

हर कोई बच्चों को अपने घर ले जाना चाहता था। वे सबकी मान–मनुहार देखकर बहुत प्रसन्न हुए। बातों–बातों में ज्ञात हुआ कि दादाजी तो गाँव के डॉक्टर हैं। बच्चों को भरोसा नहीं हुआ। सुनीता ने दादाजी से पूछा, ''क्या आप गाँव के डॉक्टर हैं?''

दादाजी ने कहा ''नहीं बेटी! ये लोग बीमार हो जाते हैं तो घर की कोई दवाई बता देता हूँ। उससे ठीक हो जाते हैं।''

दादाजी ने कहा ''हमारे खाने–पीने की चीजों में दवा के गुण होते हैं। मैं उनके बारे में जानता हूँ।'' राजू ने पूछा ''यदि आप उपचार करते हैं तो गाँव का डॉ. क्या करता है? दादाजी ने बताया ''इस छोटे से गाँव में डॉ. नहीं है।''

मीरा ने कहा ''हमें भी घर की दवा के बारे में बताइये?'' दादाजी ने कहा ''यदि तुम रसोई घर की दवाओं के बारे में जानना चाहते हो तो गर्मी की छुट्टियों में आना।'' बच्चे दो दिन बाद शिवनगर वापस आ गए। परीक्षाएँ समाप्त हुई। बच्चों ने गाँव जाना तय कर लिया। दो दिन बाद सभी बच्चे काठीपुरा जा पहुँचे। दादाजी बहुत प्रसन्न हुए। शाम हो गई थी। भोजन करने के बाद थोड़ा घूमे और फिर बच्चे सो गए। दूसरे दिन बच्चे पूरे गाँव में घूम आए। खेतों में गए। आम खाए। फिर दोपहर को घर आए। सुनीता को घरेलू दवा के बारे में जानने की बहुत उतावली हो रही थी। उसने दादाजी से पूछा ''आप डॉक्टर कैसे बने?''

दादाजी ने बताया ''जब मैं छोटा था। तब मेरे

पिताजी ने मुझे एक वैद्य जी के पास भेजा था। यह सब मैं उनसे ही सीखा।'' मीरा ने कहा ''हमें भी यह घरेलू उपचार सिखाइये?'' दादाजी ने कहा ''आज शाम से तुमको घरेलू उपचार सिखाना प्रारम्भ करेंगे।'' संध्या हुई और बच्चे दादाजी को घेर कर बैठ गए। दादाजी ने बताया कि आज वे सिर दर्द के उपचार के बारे में बतायेंगे।

फिर दादाजी ने कहा ''अब मैं जो कहता हूँ वह मन लगाकर सुनो। इसे याद रखोगे तो तुम अपना और दूसरों का उपचार व भला कर सकोगे। सिर दर्द दो तरह के होते हैं। आधे सिर का दर्द और पूरे सिर का दर्द।'' दादाजी ने आधे सिर के दर्द के उपचार के बारे में बताना प्रारम्भ किया।

दादाजी ने बताया ''जिस तरफ दर्द होता है। उस तरफ की नाक में सात आठ बूँद सरसों का तेल डालें या सूंघें। इससे दर्द एकदम बंद हो जाता है। कुछ दिनों तक दिन में दो तीन बार ऐसा करना चाहिए। इससे आधे सिर का दर्द जड़ से चला जाता है।''

मीरा ने पूछा ''कोई दूसरा उपाय बताइये?''

दादाजी ने थोड़ा रुककर कहा ''सूरज उगने से पहले गरम दूध के साथ जलेबी खाने से दर्द ठीक हो जाता है। ऐसा चार-पाँच दिन तक करने से रोग समाप्त हो जाता है।'' दादाजी ने एक और उपाय बताया ''चुटकी भर नौसादर को थोड़े से खाने के गीले चूने में मिलाकर सूंघें। इससे सिर दर्द उसी समय दूर हो जाता है।'' सुनीता ने पूछा ''दादाजी! अब पूरे सिर के दर्द का उपचार बताइये।''

दादाजी ने कहा ''नींबू की पत्तियों को कूट कर उनका रस निकाल लो। उस रस को सूंघो। ऐसा कुछ दिनों तक दिन में तीन-चार बार करो। इससे कैसा भी सिर दर्द हो, वह हमेशा के लिए चला जाता है। सुनीता ने कहा ''नानी जी कहती हैं कि तुलसी के पत्ते सिर दर्द में बहुत-बहुत लाभ करते हैं।'' दादाजी ने कहा ''हाँ! तुलसी के पत्तों को छाया में सुखाकर पीस लो। इस चूरन को सूँघने से सिर दर्द कम हो जाता है। यदि तुलसी के रस में उतना ही नींबू का रस मिलाकर पीयें तो सिर दर्द दूर हो जाता है।'' इतने में राजू ने उबासी ली। तो दादाजी बोले ''तुम लोग खेतों में घूमने के कारण थक गए होंगे। अब जाकर दूध पियो और पैर धोकर सो जाओ। इससे बढ़िया नींद आएगी। सब बच्चे सोने चले गए।''

– इन्दौर (म. प्र.)

राजकीय मछलियाँ

नागालैण्ड की राजकीय मछलियाँ

चॉकलेट महसीर

– डॉ. परशुराम शुक्ल

शानदार भारत की मछली, भारत में मिल जाती।
तिब्बत, चीन आदि देशों की, भी यह शान बढ़ाती।।
तेज धार में रहने वाली,
मछली इसको माने।
चॉकलेट जैसी रंगत से,
सब इसको पहचानें।।
भोजन नहीं अकेले करती, छोटा झुण्ड बनाती।
कीट-पतंगे, जल के पौधे, जाकर तल में खाती।।
तेज धार में ऊपर चढ़कर,
अण्डे देने आती।
देकर अंडे यह समूह में,
फिर वापस हो जाती।।
पिछले कुछ वर्षों से इस पर, भारी संकट आया।
मार-मार कर सब ने इसको, संकटग्रस्त बनाया।।

–भोपाल (म. प्र.)

श्री मुन्नीलाल

आपने एक नारा कई बार सुना होगा 'जोर जुल्म की आँधी में संघर्ष हमारा नारा है।' सामान्य तौर पर यह नारा ही रह जाता है भीड़ की आँच को भड़काने का। लेकिन ऐसे भी वीर होते हैं जो अकेले ही इस नारे को सार्थक कर दिखाते हैं। गिरिधर कवि कहते हैं 'लाठी में गुण बहुत हैं सदा राखिए पास' लाठी का असली गुण उस रात सबने देखा।

१२ अप्रैल संध्या ७.३० का समय हो चला था। मध्यप्रदेश के सागर जिले का विनायक की गाँव अपनी ओर बढ़ते मौत के अँधेरों के रूप में बन्दूकधारी डाकूओं की आहट सुन रहा था। श्री मुन्नीलाल ने सबसे पहले भय को परे धकेला और सतर्कता से गाँव वालों को इकट्ठा करना आरंभ कर लिया। गाँव में मात्र दो बन्दूकें थीं एक को लेकर एक साहसी ग्रामीण को सुरक्षित ओट में तैनात कर दिया कि डाकू आते ही गोलियों से सामना करें। दूसरे को भी सतर्कता से आवश्यकता पड़े तो तुरंत गोली चलाने के लिए समझाया।

बाकी गाँव वाले लाठियों के दम पर बन्दूकों से लोहा लेने चल पड़े। ग्रामीणों से घिरे डाकू घबरा गए। एक डाकू से मुन्नीलाल की सीधी भिड़ंत हो गई। आतंक हारा साहस जीता, डाकू भागे पर भागते-भागते मुन्नीलाल पर गोली चलाकर अपनी खिसियाहट निकाल गए। गाँव वालों की जान-माल बचे पर उनका रणनीतिकार मुन्नीलाल बलिदान हो गया। मरणोपरांत मिला अशोक चक्र उसकी वीरता की कथा कहता रहा।

–

शिशु गीत

भालू नाच दिखाओ

– डॉ. चक्रधर 'नलिन'

कहाँ जा रहे कालूराम
कुछ तो बोलो भालूराम
काले झबरे बालों वाला
वही पुराना सूट निकाला
जिसे पहन फिर फिर आ जाते
नया सूट क्यों नहीं सिलाते ?
ऐसा क्यों हैं मुझे बताओ ?
फिर छम-छम कर नाच दिखाओ !

– रायबरेली (उ. प्र.)

जब आजाद 'बहादुर नौकर' बने

– अभय मराठे

१९२८ की बात है चंद्रशेखर आजाद भूमिगत रहते हुए कानपुर से नगर के प्रसिद्ध काँग्रेसी नेता श्री प्यारेलाल अग्रवाल के यहाँ रह रहे थे। उन पर २५,००० रुपये का पुरस्कार था।

प्यारेलाल जी की पत्नी श्रीमती तारा भी देश भक्त थी और आजाद को भाई मानती थी।

रक्षाबंधन का दिन था तारा बहन अपने भाई के यहाँ रक्षाबंधन के तिलक करने कि तैयारी कर रही थीं। अपने पुत्र हृदय के कपड़े बदल रही थीं। आजाद एक मैली–कुचैली लुंगी पहने तेल मालिश कर रहे थे और उनकी सुप्रसिद्ध माउजर पिस्तौल सामने मेज पर रखी थी। प्यारेलाल अग्रवाल उनसे बातचीत कर रहे थे अकस्मात दुकान के नौकर ने आकर आवाज दी कि मेहमान (पुलिस) आ धमके हैं। आजाद और प्यारेलाल कुछ विचार मग्न हो गए। श्रीमती तारा अग्रवाल ने घबराकर पूछा– ''अब क्या होगा?'' आजाद हँसते हुए बोले– ''हम दोनों को अब फाँसी होगी और तुम्हारा सिंदूर पुँछ जाएगा।''

लेकिन तारा बहन ने युक्ति निकाली, आजाद भैया से कहा– ''मैं आगे–आगे अपने भाई को तिलक करने चलती हूँ, आप पीछे–पीछे मेरे नौकर के रूप में थाली लेकर आइये।'' उन्होंने थाली एक कपड़े से ढकी और आजाद भैया उनके 'बहादुर' नौकर के रूप में थाली लेकर उनके पीछे जीना उतर रहे थे। अँग्रेज सुप्रीटेंडेंट के साथ पुलिस अधिकारी ऊपर आ रहे थे। पुलिस ने घर को घेर लिया था। तारा बहन ने आजाद से कहा– ''बहादुर! मुँह क्या ताकता है, जरा झुक न (पुलिस की ओर संकेत कर)। आजाद झुक गए। तारा बहन ने २–३ लड्डू उठाकर उन अधिकारियों की ओर बढ़ाये व कहा– ''आज रक्षाबंधन है लाइये आपको भी राखी बाँध दूँ।'' पुलिस अधिकारी ने कहा– ''आप जाइये और अपने भाई को राखी बाँध

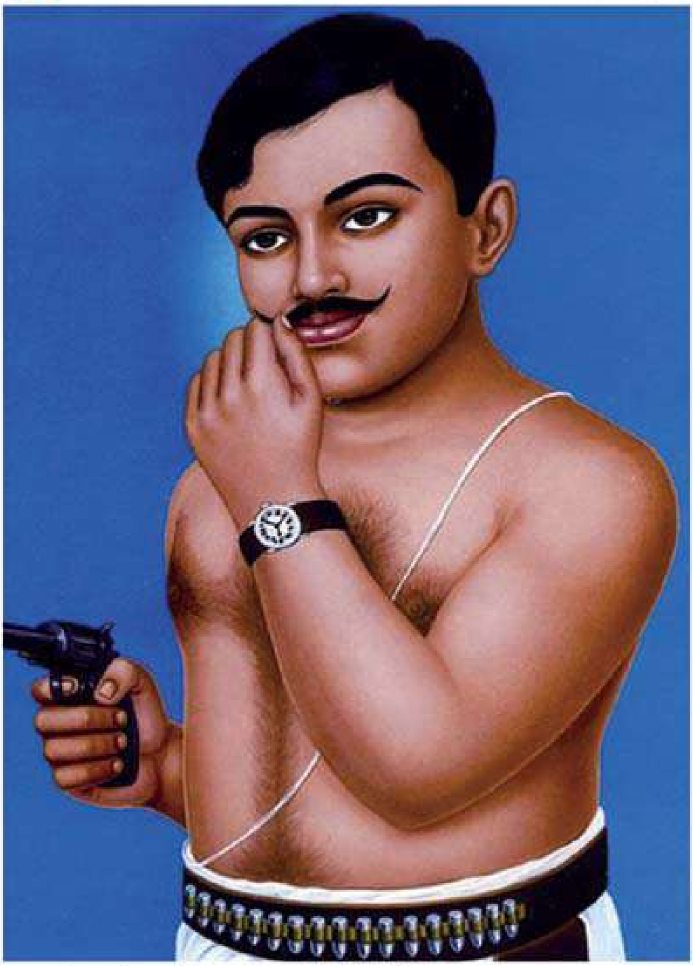

आइये, मैं यहाँ अपना काम करूँगा।''

वे अपने पुत्र हृदय और 'बहादुर' के रूप में थाल लिए आजाद भैया पुलिस घेरे को पार कर सुरक्षित निकल गए। आगे के लाटूश रोड के पास इक्के और ठेले वाले खड़े थे, वहाँ आकर तारा बहन ने थाली आजाद से ले ली और आजाद भैया ने मूलचंद चौराहे से गफूर साइकिल वाले से साइकिल ली और चले गये।

बाद में देशभक्त प्यारेलाल जी अग्रवाल के घर की डटकर तलाशी हुई, आजाद का पता न चल सका तब पुलिस ने उनसे पूछा– ''अग्रवाल जी आपकी पत्नी के साथ कौन था?'' उन्होंने कहा– ''वह मेरा नौकर था।'' तब अधिकारी अपने दल–बल के साथ यह कहकर चले गए कि– ''चिड़िया उड़ गई।''

– उज्जैन (म. प्र.)

चिर्री और चिड़वा

– शिवचरण चौहान

एक चिड़िया और एक चिरौटा, नन्हे नानू के आँगन में आए और इधर–उधर फुदकने लगे। नानू उन्हें पकड़ने दौड़ता तो वे फुदक कर दूर चले जाते। नानू ने अपनी दादी से पूछा ''ये क्यों आए हैं हमारे घर में ?''

दादी ने चावल के कुछ दाने बिखेर दिए तो चिड़ा और चिड़ी दाना चुगने लगे।

दादी बोलीं–

चिर्री और चिड़ा आए हैं
दोनों दाना खाने।
दाना खा कर पी कर पानी
गाएँगे फिर गाने।।

और सच में दोनों चूँ–चूँ कर गाना गाने लगे।

नानू ने फिर पूछा ''अब क्या करेंगे ?'' दादी बोलीं–

दोनों के नन्हें बच्चे हैं
किन्तु घोसला एक है।
चिड़िया गई बजार वहाँ से
लाई लड्डू अनेक हैं।।

नानू मचलने लगा ''मैं भी लड्डू खाऊँगा ऊँ ऊँ।''

दादी ने कहा ''अभी लड्डू बँटने तो दो।''

जन्मदिवस दोनों बच्चों का
चिड़िया आज मनाएगी।
सभी पंछियों के संग मिलकर
खीर पूरियाँ खाएगी।।

नानू फिर मचलने लगा, ''दादी! मैं भी खीर और पूरी खाऊँगा।''

दादी ने छोटी–सी कटोरी में नन्हें नानू को थोड़ी सी खीर और छोटी सी एक पूरी दी। नानू ने थोड़ी सी खाई और डकार लेने लगा और बोला– ''दादी! तो फिर क्या हुआ ?''

दादी ने कहा–

बच्चों को ले गोद, प्यार से
चिड़िया गाना गाएगी।
और तभी फिर नींद परी
चुपके–चुपके आ जाएगी।।

खीर पूरी खा कर। डकार लेकर। नन्हा नानू दादी के गोद में सो गया। और फिर क्या? कहानी खतम। खाना हजम।।

– कानपुर देहात (उ. प्र.)

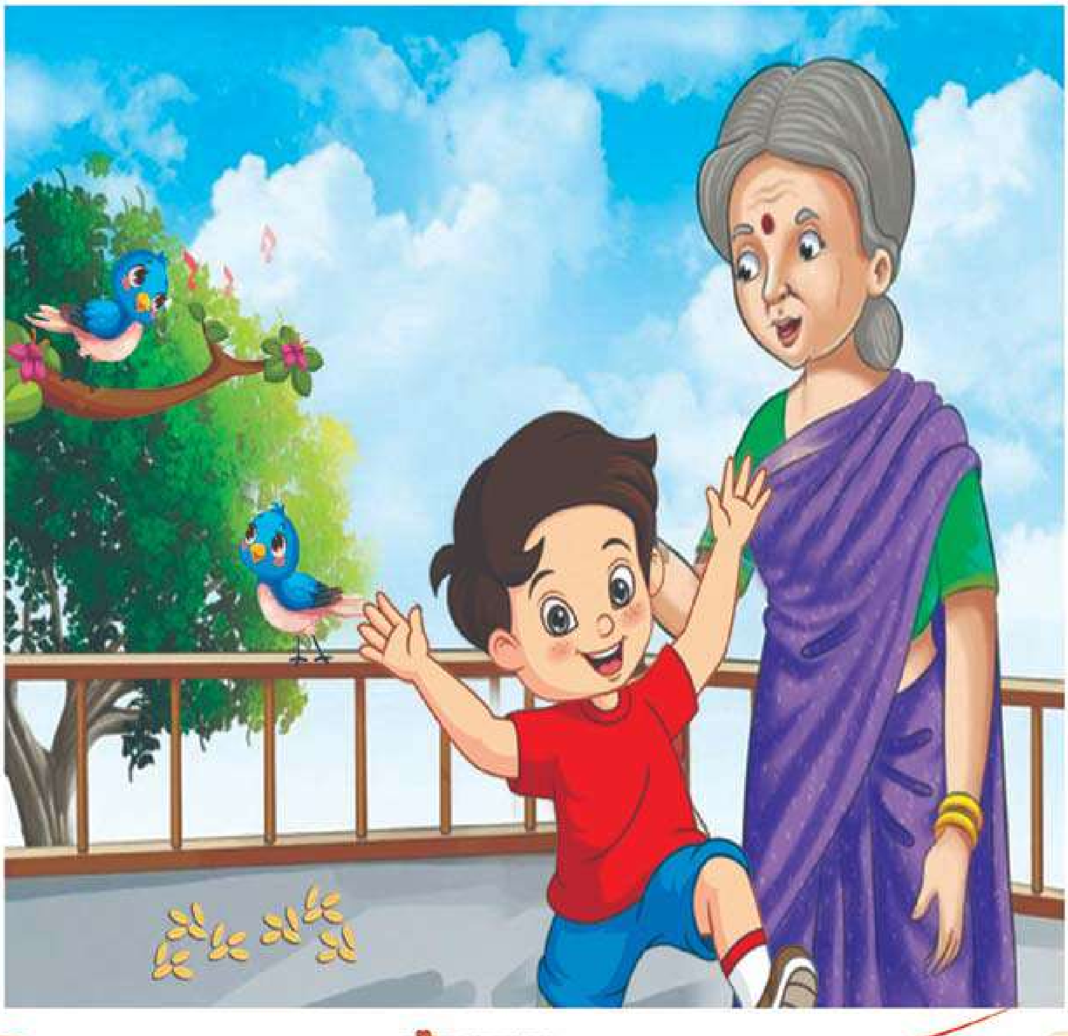

हिमालय की आत्मकथा

– रामगोपाल राही

बच्चे जिज्ञासु होते हैं, यात्रा में बच्चे साथ हो, यात्रा में उत्साह उल्लास और आनन्द बढ़ जाता है। उत्तराखंड यात्रा में शर्मा जी के साथ अपने दोनों लड़के अंकित और अंशुल साथ रहे।

दोनों ने हिमालय पर्वत के बारे में पुस्तकों में पढ़ा था हिमालय के बारे में कविताएँ पढ़ी थीं। माता–पिता के साथ आज दोनों ही हिमालय की ऊँची पर्वत श्रेणियाँ घने जंगल बर्फीली चोटियाँ देख बहुत खुश हैं।

अंकित अंशुल दोनों चाँदी से चमकते बर्फीली पानी–पानी होते पर्वतों को देख उल्लास से भरपूर और रोमांचित हैं। माता–पिता के साथ चलते–चलते दोनों कल्पनाओं में खो ऊँचे–ऊँचे बर्फीली चोटियाँ देख अंकित बोला अंशुल सामने चाँदी जैसे चमकते पर्वत है इस पर अंशुल ने कहा, ''हाँ, अंकित यह सब बर्फीले शर्मीले पर्वत है। देखो पिघल–पिघल कर पानी–पानी हो रहे हैं।''

अपने बेटे अंकित की बात सुन माता–पिता दोनों को हँसी सी आ गई। उबड़–खाबड़ पग–पग ऊँचा होता हिमालय पथ असीम प्राकृतिक सौंदर्य, अंकित अंशुल अभिभूत हो चारों तरफ दृष्टि घुमाकर देखने लगे। दोनों के मन में कई जिज्ञासाएँ हैं।

बच्चों की उछल–कूद मस्ती, सबको मन भाती आवाज से जड़ पदार्थ भी चैतन्य रूप ले लेते हैं। यात्रा पथ हिमालय पर चलते–चलते थोड़ा विश्राम के लिए रुके। रुक बैठे ही थे, इतने में अंशुल ने कहा, काश! हिमालय बोलता होता। बच्चों की आवाज सुन तथा जिज्ञासा देख– तुरन्त प्रतिध्वनि हुई! गूँजती हुई आवाज आने लगी ''मैं हिमालय पर्वत बोल रहा हूँ।

देश दुनिया में, मैं परिचय का मोहताज नहीं।

फिर कहा बालकों में तुम्हारी जिज्ञासाओं को समझ रहा हूँ। मैं अद्भुत अनुपम विशाल प्रकृति का अजीब विशाल भाग हूँ, प्रकृति की ही देन हूँ। प्रकृति की में भी एक पहचान हूँ।

दुनिया में विशेषकर से भारत के लिए हितकारी प्रकृति का वरदान हूँ। भूटान, तिब्बत, पाकिस्तान, चीन, जापान, अफगानिस्तान यह भी मेरी गोद में है। सभी तो मुझसे लाभ उठाते हैं, पर सबसे अधिक भारतवर्ष के लिए उपयोगी हूँ, यह सच्चाई है। मैं भारत का, भारत मेरा है। प्रकृति ने अजीब–सा रूप से दिया है मुझे, परन्तु मैं भारत का ही बनकर रहना चाहता हूँ भारत मुझे अपने प्राण से प्रिय है।''

हिमालय की आवाज ध्यान से सुन रहे बच्चे अवाक् थे। बच्चे विश्राम स्थल पर बैठ विश्राम करने लगे इतने में फिर हिमालय की पर्वत श्रेणियों से प्रतिध्वनि होने लगी, फिर से आवाज आ रही थी।

''मैं हिमालय हूँ, दुनिया का सबसे ऊँचा पर्वत। भू लोक का स्वर्ग, देवताओं का निवास स्थान, कालिदास मुझे पृथ्वी का मानदंड मानते थे। भारत का इतिहास मेरा इतिहास है, भारत का गौरव मेरा गौरव है।

बच्चो सुनो! मेरा भौतिक स्वरूप भू–आकृति विभाजन। उत्तरी पर्वत माल, मेरा (हिमालय पर्वत का) क्षेत्रफल लगभग पाँच लाख वर्ग किलोमीटर में फैला है। मेरी लंबाई पश्चिम से पूर्व की ओर लगभग दो हजार पाँच सौ किलोमीटर है। उत्तर से दक्षिण चौड़ाई एक सौ साठ से चार सौ किलोमीटर तक मिलती है। मेरी औसत ऊँचाई समुद्र तल से लगभग छः हजार मीटर है। मेरा विस्तृत क्षेत्र भारत, तिब्बत, भूटान, चीन, नेपाल, पाकिस्तान, म्यांमार, अफगानिस्तान तक है। बच्चों मेरे अपने विभिन्न पहलू में स्थिति विस्तार विचित्र–सा है किन्तु सुंदर है। संसार के लोग मेरे बारे में कहते हैं भारत के परिप्रेक्ष्य में हिमालय महत्वपूर्ण है जिसमें सबसे ऊँची पर्वत शृंखला स्थित है।

यह भारत की उत्तर पश्चिम में नागा पर्वत चोटी (शिखर) से उत्तर पूर्व में नामचा बरुवा पर्वत चोटी तक। अर्थात उत्तर पश्चिम में सिंधु नदी से मोड़ से उत्तर पूर्व में ब्रह्मपुत्र नदी के मोड़ तक अर्ध चंद्राकार रूप मे फैला हुआ है।

हिमालय की प्रतिध्वनि में आवाज आई मेरी

सबसे ऊँची चोटी माउण्ट एवरेस्ट ८८४८ मीटर ऊँची है, बालको। इसी के चलते बता दूँ जन्मतिथि तो याद नहीं ६.५ करोड़ों वर्ष पूर्व मेरा, महान हिमालय का उदय हुआ।

बच्चो! मुझे महान हिमालय मध्य हिमालय और शिवालिक के रूप में भी जाना जाता है।

मेरी उत्पत्ति सिद्धांतों से जानी जाती है। अभिन्नति सिद्धांत, महाद्वीपीय विस्थापित सिद्धांत। महाद्वीपीय विस्थापन सिद्धांत के अनुसार कार्बोनिफेरिस युग अनादि काल युग में पैंजिय का विखण्ड हुआ। इसका उत्तरी भाग लोरेसिया अंगारालैंण्ड तथा दक्षिणी भाग गोंडवाना लैंण्ड, इन दोनों के मध्य टेथिस सागर माना जाता है। टेथिस सागर में निक्षेपित मलवा के उत्थान से मेरा हिमालय का निर्माण हुआ।

अभिन्नति सिद्धांत, अंगारालैंण्ड तथा गैंडवान लैंण्ड से निकलकर सागर में गिरने वाली नदियों से निक्षेपण का जमाव टेथिस सागर में होने लगा। धसाव प्रक्रिया के चलते आकार मोटाई बढ़ने लगी, भूसन्नति के ऊपर परत ऊपर परत उठ जमने से हिमालय का निर्माण हुआ, बच्चों मेरी उत्पत्ति के सिद्धांत और भी है। प्रकृति आकृति विभाजन पर, पार हिमालय ट्रांस हिमालय नाम से भी जाना जाता है। ट्रांस हिमालय परत दर परतों से निर्मित है। इसमें कैलाश श्रेणी, लद्दाख जास्कर तथा कारकोरम श्रेणी से सिंधु इन्हीं पर्वत श्रेणियों के मध्य से निकलती है।

मेरे चार भागों में से (१) पार इसी में कारकोरम श्रेणी ८६११ मीटर ऊँची है जो माउंट एवरेस्ट से कम छोटी पर्वत श्रेणी (चोटी) है। सिंधु सतलज ब्रह्मपुत्र नदी का उद्‌गम इधर इन्हीं पर्वत श्रेणियों से है।

मेरे अपने अंचल में भाग (२) महान हिमालय– सर्वाधिक ऊँचाई होने से इसे बृहद् हिमालय भी कहा जाता है। वर्षभर बर्फ से ढके रहने के कारण इसे हिमाद्रि के नाम से भी पुकारा जाता है। मेरी सभी ऊँची

पर्वत श्रेणियाँ इसी में स्थित है। माउंट एवरेस्ट, मकालू, धोलगिरी, अन्नपूर्णा गुरुला मन्धात (नेपाल) नंगा पर्वत, कंचनजंगा, नंदा देवी, नामचा बरुआ (भारत)। वर्षभर बर्फ से ढँके रहने के कारण गंगोत्री, जेमू आदि हिम नदियाँ यहीं से निकलती हैं।

(३) लघु हिमालय मध्य हिमालय, यह अलग तरह का है। इसमें कायांतरित चट्टानों का बाहुल्य है। इसी में पीर पंजाल, जम्मू कश्मीर, धौलाधर, हिमाचल प्रदेश नागा टीला श्रेणी, मसूरी श्रेणी, उत्तराखंड, महाभारत श्रेणी, नेपाल आदि सम्मिलत है। यह बड़ी महत्वपूर्ण है इसमें कई प्रसिद्ध घाटियाँ हैं। कश्मीर घाटी, हिमाचल कांगड़ा कुल्लू घाटी, नेपाल में काठमांडू घाटी। इसमें स्वास्थ्यवर्धक स्थान व अच्छे नगर हैं। शिमला, मनाली, मसूरी, नैनीताल, दार्जिलिंग।

(४) मुझे शिवालिक हिमालय के रूप में भी जाना जाता है। जिसके कारण इसे बाह्य हिमालय या उप हिमालय के नाम से भी जाना जाता है। समझा जाता है। जहाँ ईश्वरीय सारे ऐश्वर्य खूबसूरती के साथ विद्यमान हैं। बच्चो! मुझ हिमालय को अनेक रत्नों का जन्मदाता समझा जाता है (अनन्त रत्न प्रभवस्य यस्य) यहाँ पर्वत श्रृंखलाओं में जीवन औषधियाँ उत्पन्न होती है। (भवन्ती यत्रोषधयो रजन्याम तैल पुरत सुरत प्रदीप) यहाँ पृथ्वी पर स्वर्ग है (भूपर्दिवभि वारूढं)।

बच्चो! मुझे कश्मीर या उत्तरी पश्चिमी हिमालय, हिमाचल और उत्तरांचल हिमालय, दार्जिलिंग और सिक्कम हिमालय, अरुणाचल हिमालय या असम हिमालय, पूर्वी पहाड़ियाँ और पर्वत इस तरह भी पुकारा जाता है।''

हिमालय की अपनी आत्मकथा उसी के मुँह से सुन बच्चे उनके माता-पिता आत्म विभोर थे।

आत्म विभोर माता-पिता, बच्चे अंकित, अंशुल सभी एक साथ बोले ''हमें और भी स्थान देखने हैं।'' इतने में हिमालय की फिर आवाज आई ''तुम जहाँ भी जाओगे वहाँ मेरी आवाज सुनोगे।'' अपनी यात्रा के अन्तर्गत अंशुल और माता-पिता आगे बढ़े प्रतिध्वनि रुक-रुक कर आती रही।

हिमालय बोला ''मैं प्रारम्भ से भारत देश की रक्षा करता आया हूँ। कोई भी मुझे आँख दिखाने का प्रयत्न करता है तो मैं उसे मुँहतोड़ उत्तर देता हूँ। मैं भारत का अटल पहरेदार हूँ, रक्षक हूँ, मेरे मस्तक पर बर्फ का सुन्दर मुकट है।

शेरपा तेनसिंह और एडमंड हिलेरी सबसे पहले मेरे अजय शिखर एवरेस्ट पर चढ़ने में सफल हुए थे। मैंने उनके साहस का अभिनंदन किया था।'' अंकित अंशुल प्रतिध्वनि ध्यान से सुन रहे थे।

''बच्चो! याद रखना मैं भारतीय संस्कृति का पिता हूँ। आर्यों का आदि आस्थान हूँ। ऋषि-मुनि व कई तपस्वी मेरे अंचल में मेरी कंदराओं में वर्षों तक तपस्या करते थे। हिमालय ने बहुत प्रफुल्लित हो बताया। वाल्मीकि ऋषि ने रामायण, महर्षि वेदव्यास ने महाभारत मेरी गोद में ही लिखा था। पाण्डव ने मेरे आँगन से ही स्वर्गारोहण किया था।''

हिमालय आगे बोला भारतीय हितों में मेरा होना (प्रभाव) बहुत महत्वपूर्ण है।

बच्चो! जान लो भारतीय दृष्टिकोण से हिमालय पर्वत श्रृंखला काफी महत्वपूर्ण समझी जाती है इसकी स्थिति से ही भारत एक अलग भारतीय उपमहाद्वीप के रूप में जाना जाता है। इसका अपना प्रभावात्मक महत्व है।

हिमालय बोलता रहा ''बच्चो! मेरे होने से भारतीय जलवायु पर प्रभाव पड़ता है। अवरोध के रूप में- मैं हिन्द महासागर से आने वाली दक्षिण-पश्चिम मानसून की हवाओं को रोकता हूँ, इससे भारत में वर्षा होती है। साइबेरिया से आने वाली ठंडी हवाओं को रोकता हूँ। सुरक्षा दीवार हूँ, बर्फ से ढँके रहने के कारण

किसी से छुपी नहीं सदानीरा नदियाँ मेरे अंचल से ही निकलती हैं। मेरे से संलग्न उत्तरी बृहद मैदान है, उपजाऊ मृदा वाले। सिंचाई के लिए पनबिजलीघर स्रोत हैं। मेरे में वनों की प्रचुरता है सभी औषधियाँ पेड़-पौधे और घने जंगल हैं। खनिज संपदाएँ हैं। सारा-सारा संसार जानता है प्राकृतिक अनुपम अद्भुत सौंदर्य मेरे आंचल में है ऐसा प्राकृति सौंदर्य दुनिया में कहीं नहीं।

पवित्रता का दूसरा नाम हिमालय है मेरे अंचल में कई धार्मिक स्थल है अमरनाथ, मान सरोवर, वैष्णो देवी, केदारनाथ, बद्रीनाथ, हरिद्वार, ऋषिकेश, पंच प्रयाग, गंगोत्री, यमुनोत्री, ज्वाला देवी कई प्रसिद्ध स्थान हैं।

बालको!''वास्तव में मेरी अपनी कई विशेषताएँ हैं। मैं अपनी किन-किन विशेषताओं को बताऊँ।''

हिमालय फिर बोला ''बच्चो! सुनो मैं इतना विशाल हूँ कि संसार कि सभी दु:ख मुझमें समा सकते हैं। मैं इतना शीतल हूँ कि सब प्रकार की चिंताओं की अपनी अग्नि शांत कर सकता हूँ। मैं इतना ऊँचा हूँ कि मोक्ष की सीढ़ी बन सकता हूँ। मैं इतना धनाढ्य हूँ कि देवों के कोषाध्यक्ष कुबेर को भी आश्रय दे सकता हूँ। आध्यात्मिक चेतना का केन्द्र हूँ।

सच पूछो तो ईश्वर ने अपने सारे ऐश्वर्य बहुत ही खूबसूरती के साथ मुझ हिमालय में स्थापित किए हैं। हर भारतवासी को मुझ पर गर्व है। हर भारतवासी कहता है, कह सकता है, हिमालय हमारा है। अच्छा जय भारत।'' बच्चों के साथ शर्मा जी यात्रा पूरी हुई। हिमालय की आवाज भी बंद हो गई थी। यात्रा में विभोर हो घर लौट रहे थे।

– बूँदी (राजस्थान)

कविता

हम पंछी बन जाएँ

– टीकेश्वर सिन्हा 'गब्दीवाला'

चलो कुछ कर जाएँ,
हम पंछी बन जाएँ।
नील गगन उड़ते हुए।
चाँव-चाँव करते हुए।
नदी पर्वत देख आएँ।
हम पंछी बन जाएँ।
पड़े हुए दानों को।
पके हुए फलों को।
मिल-बाँट कर खाएँ।
हम पंछी बन जाएँ।
बना कर स्वयं घोसला।
मन में रख हौंसला।
अच्छे से रह पाएँ।
हम पंछी बन जाएँ।

– बालोद (छत्तीसगढ़)

सुन्दर सुन्दर नन्हीं चिड़ियाएँ

– बलदाऊ राम साहू

सुबह का समय था। सूरज पूरब में अपनी लालिमा बिखेर रहा था। ठंडी–ठंडी पुरवाई चल रही थी। पंछी गा रहे थे। सूरज की गुनगुनी धूप, ठंडी पुरवाई और पंछियों का गाना किसे अच्छा नहीं लगता। ऐसे सुहावने मौसम में सोहन और मोहन रोज सुबह अपना फुटबॉल लेकर उद्यान में आ जाते। सुबह जल्दी उठकर बागीचे में आना उनकी दिनचर्या का हिस्सा था। आज रविवार था। आज जब वे उद्यान में पहुँचे तब चिड़ियों का गाना बंद हो चुका था। चिड़ियों के गान के बिना उन्हें कुछ अधूरा–सा लग रहा था। वे दोनों पेड़ों को निहारने लगे तो उन्हें किसी भी पेड़ पर चिड़ियाँ दिखाई नहीं दीं। तब सोनू ने मोनू से कहा– ''मोहन! आज ये चिड़ियाएँ कहाँ चलीं गईं होंगी, किसी भी पेड़ पर चिड़ियाएँ दिखाई नहीं दे रहीं हैं?''

''हाँ दादा! वास्तव में हमें आने में कुछ विलंब हो गया लगता है। संभवत: इसलिए चिड़ियाएँ दाना चुगने चलीं गई हैं।''

''हाँ मोहन! आज हमें कुछ देर तो हुई है, किन्तु इतनी देर भी नहीं हुई है। देखो न सूरज अभी निकल ही रहा है?''

''दादा! हमें भले ही विलंब हो सकता हैं लेकिन ये चिड़ियाएँ समय के पालन में पक्की होतीं हैं। ये नित्य समय पर अपना कार्य करतीं हैं। समय पर उठना, समय पर दाना चुगने जाना और संध्या समय लौट आना।''

''हाँ मोहन! तुम ठीक कहते हो, चलो हम कुछ समय अब फुटबॉल खेल लें, और विलंब करना ठीक नहीं। सोनू और मोनू फुटबॉल खेलने में लग गये। वे एक–दूसरे को छकाने में लगे हुए थे तभी चिड़ियों की मधुर आवाज सुनाई दी। मोहन ने सिर उठाकर पेड़ों की ओर देखा तो एक पेड़ की शाख पर दो नन्हीं चिड़ियाएँ बैठी हुई थीं और वे ही गा रही थीं। मोहन चिड़ियों को देखता ही रह गया। तब तक सोहन बॉल लेकर आगे निकल गया था। मोहन को पीछे न आते हुए देखकर सोनू ने जोर से चिल्लाया, ''मोहन तू क्या कर रहा है? जल्दी इधर आ, देखो मैं बॉल लेकर कितने आगे निकल आया हूँ।''

''दादा! तुम रुको, देखो तो कितनी सुंदर–सुंदर चिड़ियाँ हैं। ये कितना मधुर गा रहीं हैं। लौट आओ।'' मोहन ने जब आवाज दी तो सोहन वहीं रुक गया और बॉल को रोक लिया।

''मोहन! तुम खेलना छोड़कर यहाँ क्या रहे हो, ऐसे में हम अभ्यास कैसे कर पाएँगे?''

''दादा! जरा देखो तो, ये नन्ही–नन्ही रंग–बिरंगी चिड़ियाएँ, मैंने ऐसी चिड़ियाएँ कभी नहीं देखी थी। ये कितना मीठा गातीं हैं।

''हाँ रे मोहन! सच में ये बहुत ही सुंदर हैं।''

तभी दोनों नन्हीं चिड़ियाएँ फिर गा उठीं। सोहन और मोहन आपस में बात ही कर रहे थे कि वे नीचे आकर फुदक-फुदक कर नाचने लगीं। उनका फुदकना भी अच्छा लग रहा था। सोहन और मोहन चिड़ियों का फुदकना देखते ही रह गए। आज तो उन्हें आनंद ही आ गया। जैसे ही मोहन ने एक नन्हीं चिड़िया को पकड़ने के हाथ आगे बढ़ाया, नन्हीं चिड़िया फुर्र से उड़कर पेड़ पर जा बैठी।

''चलो मोहन! अब चलते हैं, बहुत समय हो गया। कल इन चिड़ियाओं के लिए घर से कुछ दाने लेकर आएँगे। एकाएक ये हम पर कैसे विश्वास करेंगी? धीरे-धीरे ही ये हम पर विश्वास कर पाएँगी।''

सोहन और मोहन जब घर पहुँचे तब नौ बज रहे थे। जल्दी-जल्दी नहाकर वे पढ़ने के लिए तैयार हुए लेकिन आज उनके आँखों के सामने वे चिड़ियाएँ ही नाच रहीं थीं। उन्होंने इन चिड़ियाओं के बारे में अपने दोस्तों को भी बताया था। बहुतों को उनकी बातों पर विश्वास नहीं हो रहा था।

दूसरे दिन सुबह फिर सोहन और मोहन अपना फुटबॉल लेकर उद्यान में निकल पड़े। कुछ दूर जाने बाद मोहन को याद आया कि चिड़ियों के लिए उन्हें कुछ अन्न के दाने रखना था लेकिन वे भूल गए। उसने सोहन से कहा- ''दादा! चिड़ियों के लिए तो दाना रखना भूल ही गए। मैं दौड़कर जाता हूँ, कुछ दाने ले आता हूँ।''

''जाओ! पर शीघ्र ही आना विलंब करने पर शाला जाने के लिए देर हो जाती है।''

''जाता हूँ दादा!''

मोहन दौड़कर घर गया और मुट्ठी भर चावल ले आया। जब वे उद्यान में पहुँचे तब बड़ी चिड़ियों दाना चुगने के लिए निकल रहीं थीं। एक साथ चीं-चीं, चूँ-चूँ से वातावरण संगीतमय बना हुआ था। जब सभी चिड़ियाएँ दाना चुगने के लिए निकल गईं तब सोहन और मोहन उन दोनों नन्हीं चिड़ियाओं की खोज में लग गए। कल जिस पेड़ पर वे बैठीं थीं उस पेड़ को जाकर देखा तो वे वहाँ नहीं मिलीं। मोहन ने कहा- ''दादा! कल तो इसी पेड़ पर बैठीं थीं, आज कहाँ चलीं गईं होंगी।''

''हाँ, कल यहीं थीं।'' तभी दूर से उन चिड़ियाओं की आवाज आई, जिस ओर से चहचहाहट आई थी उस ओर देखा तो वे दोनों नन्हीं चिड़ियाएँ पेड़ पर फुदक रहीं थीं। मोहन ने उन्हें चावल के दाने दिखलाए लेकिन वे वहीं बैठीं रहीं। वहाँ से टसमस नहीं हुईं।

सोहन ने कहा- ''मोहन! ये ऐसे नहीं आएँगी। तुम चावल के दाने यहीं बिखेर दो, वे आकर खा लेंगी।'' ''ठीक है दादा! चलो तब तक हम फुटबॉल खेलते हैं।''

मोहन चावल के दाने बिखेर कर फुटबॉल

खेलने लग गया। किन्तु उसकी दृष्टि चिड़ियाओं की ओर थीं इसलिए कई बार बॉल को मारने के लिए चूक जाता था। सोनू उसे बार-बार टोकता था कि बॉल को ठीक से मार। किन्तु आज तो उससे चूक हो रही थी। इसी तरह रोज आते-जाते।

धीरे-धीरे उनका चिड़ियाओं से जुड़ाव बढ़ता गया। जब भी वे उद्यान आते थे तब चिड़ियाओं के लिए चावल दाने लेकर आते थे और चिड़ियाओं को दाने देकर खेलना प्रारंभ करते थे।

धीरे-धीरे चिड़ियाओं का भय भी खत्म होने लगा। अब तो जैसे ही सोहन और मोहन उद्यान पहुँचते थे वैसे ही वे पेड़ से नीचे आकर फुदकने लगतीं और अपने मधुर स्वरों में चीं-चीं, चूँ-चूँ गातीं। उनकी इन क्रियाओं को देखना सोहन और मोहन को बहुत अच्छा लगता था। वे आते-जाते चिड़ियाओं से एक बार अवश्य मिलते थे।

चिड़ियाओं और सोहन-मोहन की मित्रता से परिवार के सभी सदस्य परिचित हो गए थे। इसलिए जब भी वे सुबह उद्यान के लिए निकलते थे, सभी उन्हें चिड़ियाओं के लिए कुछ न कुछ दे देते थे। आज तो मुनिया भी साथ चलने के लिए हठ कर रही थी, लेकिन हर बार कोई न कोई उसे मना कर देता था। जब कोई मना करता तो मुनिया को बहुत बुरा लगता था। कई बार तो माँ से लड़ लेती थी और अपने पढ़ाई के कमरे में मुँह फुलाए बैठी रहती थी। माँ के बार-बार बुलाने पर भी वह नाश्ते के लिए नहीं उठती थी।

बाबा मुनिया की हठ समझते थे, इसलिए मुनिया को मनाने का उत्तरदायित्व बाबा जी ने ले रखा था। घर में सभी जानते हैं कि मुनिया को मनाना बाबा के छोड़ किसी के वश की बात नहीं है। जब बाबा मुनिया को मनाने जाते तब वह मुँह फेर लेती और कहती- ''जाओ, मैं आपसे बात नहीं करतीं। जब सभी डाँटते हैं तब आप मौन साध लेते हैं। किसी को एक शब्द भी नहीं कहते और बाद में फुसलाने चले आते हैं। आप भी उन्हीं की ओर से हो।''

''नहीं बेटा! मैं उनकी ओर से बिलकुल नहीं हूँ। मैं इसलिए नहीं बोला कि सोहन और मोहन तुम्हें छोड़कर आ न जाएँ। अन्यथा फिर तुम रोती रह जाती। नहीं तो मैं पक्का बोलता। सोहन और मोहन कितने नटखट हैं, तुम नहीं जानती हो।''

''बाबा! लेकिन प्रण करो, आप किसी दिन मुझे उद्यान ले चलोगे, मैं उन खूबसूरत चिड़ियाओं को देखना चाहती हूँ।''

''ठीक है, ठीक है, हम दोनों ही चलेंगे, और किसी को नहीं ले जाएँगे।''

मुनिया अब तो उछलने लगी। उसे बाबा ने वचन जो दिया था। सोहन और मोहन जब उद्यान से वापस आए तो मुनिया माँ के पास बैठकर पराठे खा रही थी। मोहन भी दौड़ते हुए रसोई में पहुँच गया और कहने लगा- ''माँ! मुझे भी पराठे दे दो।''

''चल भाग यहाँ से, पहले नहा-धो ले, फिर तुम लोगों के लिए भी भोजन परोस देती हूँ।''

जब मोहन को माँ की घुड़की पड़ी तो मुनिया को आनंद आया, उसने भी जीभ दिखा दी। जैसे ही मोहन-मुनिया की ओर दौड़ना चाहा, माँ ने फिर फटकार लगाई। मोहन अपना-सा मुँह लेकर चला गया। मुनिया की साध आज पूरी हो गई। माँ ने मोहन को डाँटा, बड़ा लाड़ला बेटा बनता है।

आज शाम जब सोहन और मोहन शाला से आए ही थे उसी समय माँ और पिता जी खरीदारी करने के लिए निकल रहे थे। बच्चों को सामने देखकर पिता जी ने सभी से पूछ लिया, कुछ चाहिए क्या? मोनू ने तपाक से कहा- ''पिता जी! एक पिंजरा लेते आना।''

''क्यों, क्या करोगे पिंजरे का?''

''पिता जी! उसमें उन दोनों नन्हीं चिड़ियाओं को रखेंगे। वे बहुत सुंदर हैं और गाती भी हैं।'' पिता जी बोलने ही वाले थे कि उनसे पहले बाबा बोल पड़े।

''अच्छा बताओ मोहन! तुम्हें अपनी माँ–पिता जी से दूर किसी दूसरे के घर बंद करके रख दिया जाय तो तुम्हें कैसा लगेगा?''

''बताओ मोहन! उत्तर दो। बाबा के प्रश्नों का?'' पिता जी ने कहा। मोहन चुपचाप सिर झुकाए खड़ा रहा। उसके पास कोई उत्तर ही नहीं था।

बाबा ने कहा– ''देखो बेटा! ये पंछी उन्मुक्त गगन में उड़ते हुए अच्छे लगते हैं। उनका गाना, उनका फुदकना हमें तब तक लुभाते हैं जब तक ये पूरी स्वतंत्रता के साथ विचरते हैं। जो लोग इन्हें पिंजरे में बंद करके रखते हैं वे उनके साथ अन्याय करते हैं। अपने मनोरंजन के लिए इन निरीह प्राणियों को बंधन में रखना उचित नहीं होता। फिर उनके विश्वास का क्या जो वे तुम लोगों के ऊपर करते हैं? जब तुम लोग उनसे पहले मिले तो तुम पर उनका विश्वास नहीं था। जब तुम लोगों ने उनसे स्नेह जताया तो वे तुम्हें देखकर प्रसन्न हो जातीं हैं और तुम्हारे आसपास आ जातीं हैं।

सोहन और मोहन को जब बाबा की बात समझ आई तो वे मुनिया को लेकर उछलते हुए उद्यान की ओर चल पड़े।

– दुर्ग (छत्तीसगढ़)

लघुकथा

असली प्रतिभा

– गोविन्द भारद्वाज

''रोहित तुम बहुत बड़े चित्रकार हो गये हो। अब तो तुम राष्ट्रीयस्तर पर सम्मानित होने लगे हो।'' प्राचार्य जी ने उसे प्रतिभाशाली छात्र का पुरस्कार देते हुए कहा।

''जी... श्रीमान! प्रतिभा खरीदी भी जा सकती है।'' एक बच्चे के पिता ने अपनी सीट पर खड़े होकर कहा। ''मैं कुछ समझा नहीं बन्धु!'' प्राचार्य जी ने पूछा। उस व्यक्ति ने कहा– ''प्राचार्य जी सच्चा प्रतिभाशाली बालक तो मेरे साथ आया है।'' ''कौन है यह बालक?'' प्राचार्य जी ने माइक पर बोलते हुए पूछा।

''प्राचार्य जी! मैं एक अनाथ बालक हूँ, सेवा भाव अनाथाश्रम में रहता हूँ.. ये जो भी...।''

उसकी आँखें भर आईं। ''बोलो बेटा..! डरने की कोई आवश्यकता नहीं है।'' प्राचार्य जी ने उसका साहस बढ़ाते हुए कहा। बालक बोला– ''रोहित के माता–पिता अनाथ आश्रम में मेरे बनाए चित्र को खरीदकर उस पर रोहित का नाम लिख देते हैं... और सम्मान और पुरस्कार इसे मिल जाता है।''

''क्या यह सच बोल रहा है रोहित...?'' प्राचार्य जी ने तीखे स्वर में पूछा। रोहित मूर्ति बन चुका था। उसके पास कोई उत्तर नहीं था।

खामोशी तोड़ते हुए प्राचार्य जी ने कहा– ''उत्तर मिल गया। यह पुरस्कार रोहित को नहीं, बल्कि इस बालक को दिया जाता है। क्या नाम है तुम्हारा?''

''जी! गौरव।'' बालक ने संक्षिप्त में कहा। ''आज ऐसे प्रतिभाशाली को खरीद कर लोग झूठा नाम कमा रहे हैं। मैं गौरव को अपने विद्यालय में प्रवेश ही नहीं दूँगा, बल्कि इसकी प्रतिभा का देश–विदेश में डंका बजाने का काम भी करूँगा।''

प्राचार्य जी ने बड़े जोश के साथ कहा तो सभागार तालियों से गूँज उठा।

– अजमेर
(राजस्थान)

विज्ञान व्यंग

-संकेत गोस्वामी

काशी यात्रा का फल

– तपेश भौमिक

गोपाल को मेले–ठेलों में जाने का खूब शौक था। लेकिन उसके साथ परेशानी यह थी कि वह बाहर निकलता कि लोगों की भीड़ उसके पीछे पड़ जाता। लोग तरह–तरह के प्रश्न करते और उसकी बेबाक बातों का आनंद उठाते।

अधिकतर लोग मुर्खतापूर्ण प्रश्न ही करते थे जिससे गोपाल को गुस्सा आ जाता। इसलिए वह इस प्रयत्न में रहता कि जब भी चला जाए, तब दूर–दूराज के मेले में ही चला जाय ताकि परिचित कोई न दिखे। ऐसे ही एक दिन अपने कुछ मित्रों के साथ वह दूर के किसी मेले की ओर चला। लेकिन होनी को कौन टाल सकता है? एक परले दर्जे का मुर्ख आकर गोपाल से सीधे लिपट गया। वह तब तक लिपटा रहा, जब तक कि गोपाल ने यह वचन न दे दिया कि उसे उसके प्रश्नों का उत्तर अवश्य दिया जाएगा। गोपाल ने झल्ला कर पूछा, ''कहो क्या कहना है?'' इस पर उस आदमी ने पूछा, ''सुना है काशी में मरने वाले सीधे स्वर्ग जाते हैं और व्यास काशी में मरने वालों का अगला जन्म गधे का होता है। अब मेरा प्रश्न यह है कि यदि कोई काशी और व्यास काशी के बीच मरे तो उसका क्या होता है?'' गोपाल ने झल्ला कर कहा, ''वह आप जैसे मुर्ख के रूप में धरती का बोझ बनता है। वह मुर्खतापूर्ण बातें करता है। पिछले जन्म में आपकी मृत्यु काशी और व्यास काशी के बीच ही हुई थी।''

''तो मैं काशी में जाकर मरूँगा, मुझे स्वर्ग प्राप्त करना है।'' उस व्यक्ति ने प्रसन्न होकर कहा।

''मुर्ख गधे का बड़ा भाई होता है। अब आपको अपना जन्म–चक्र पूरा करने हेतु व्यास काशी में जाकर रहना होगा। गधा–जन्म पूरा करने के बाद मेरे पास आइएगा, मैं काशी में मरने का उपाय बता दूँगा।'' गोपाल ने बड़े तरीके से इस बात को जब कहा तब वह वहाँ से भाग खड़ा हुआ। उसने पुन: पीछे मुड़ कर नहीं देखा।

– कूचबिहार (पं. बंगाल)

शकुन्तला का जन्म

– मोहनलाल जोशी

विश्वामित्र नाम के एक ऋषि थे। एक बार वे कठोर तपस्या करने लगे। इन्द्र देवता उनकी तपस्या से डर गये। उन्होंने मेनका अप्सरा को भेजा। मेनका ने ऋषि के पास बहुत नृत्य किये। उनकी तपस्या भंग कर दी। अप्सरा ने एक पुत्री को जन्म दिया। ऋषि तथा अप्सरा पुत्री को छोड़कर चले गये। शकुन्त पक्षियों ने अपने पंख फैलाकर उसकी रक्षा की। तभी कण्व ऋषि वहाँ पर आये। कण्व ऋषि ने बच्ची के रोने की आवाज सुनी। शकुन्तों के पंखों के नीचे बच्ची सो रही थी। वे बच्ची को अपने आश्रम लाये। उसका नाम शकुन्तला रख दिया। उसका लालन-पालन किया। वह वन में ही बड़ी हुई। वह कण्व ऋषि को ही पिता मानकर उनकी प्रत्येक आज्ञा का पालन करती थी।

शकुन्तला का विवाह

कुरु वंश का बड़ा नाम था। कुरुवंश में सभी प्रतापी राजा हुए। वे सब धर्म से प्रजा का पालन करते थे। राजा दुष्यन्त भी कुरुवंश में उत्पन्न हुए थे।

एक बार राजा दुष्यन्त शिकार करने जंगल में गये। वे एक हिंसक पशु का पीछा कर रहे थे। वे जंगल के बहुत अन्दर चले गये। वहाँ राजा ने एक सुन्दर आश्रम देखा। वहाँ फलों से लदे पौधे थे। बहुत सारे सुगंधित फूल थे। वह कण्व ऋषि का आश्रम था। राजा ने आवाज लगायी- अन्दर कोई है? कण्व ऋषि आश्रम में नहीं थे। शकुन्तला कुटिया से बाहर आयी। उसने राजा का परिचय पूछा। राजा की आव भगत की।

राजा दुष्यन्त ने शकुन्तला से गन्धर्व विवाह किया। कुछ समय आश्रम में रहा। बाद में अपनी राजधानी चला गया।

भरत का जन्म तथा राज्याभिषेक

शकुन्तला ने आश्रम में एक पुत्र को जन्म दिया। उसका नाम भरत रखा। भरत वन में ही बड़ा हुआ। वह भयानक पशुओं के साथ खेलता था। उसे बिल्कुल ही डर नहीं लगता था।

भरत बड़ा हो गया। कण्व ऋषि ने कहा- शकुन्तले! भरत बड़ा हो गया है। तुम राजमहल जाओ। भरत की उसके पिता से भेंट कराओ।

शकुन्तला अपने पुत्र भरत को लेकर राजधानी आयी। उसके साथ अनेक ऋषि भी आये थे। उन्होंने राजमहल का मार्ग बताया। राजा दुष्यन्त शकुन्तला को भूल गया था। उसने शकुन्तला को पत्नी मानने से इंकार कर दिया। वह भरत को भी अपना पुत्र नहीं मानते थे। शकुन्तला ने पूरी बात बतायी। तभी आकाशवाणी हुई। शकुन्तला सच्ची थी। दुष्यन्त ने अपने पुत्र को अपना लिया उसे गले लगाया। फिर युवा होने पर उसका राज्याभिषेक हुआ। उसके नाम से यह देश 'भारत' कहलाया।

– बाड़मेर (राजस्थान)

हठ कर बैठा चंद्र एक दिन

– धर्मेश सिंह

हठ कर बैठा चंद्र एक दिन
बहना उसकी धरती है।
मैं तो घूमूँ पास तेरे ही
तू क्यूँ रूठी–रूठी रहती है ?

धरती चुप थी, कुछ न बोली
चंदा ने रोना शुरू किया।
नाक बही, फिर आँसू निकले
सिसकी लेना शुरू किया।।

इतना नाटक किया चंद्र ने
तब जा थोड़ा असर हुआ।
भैया को जो रोते देखा
बहन का गुस्सा पिघल गया।।

बोली धरती चंदा से फिर
तू क्यूँ भागा है फिरता।
शुक्ल पक्ष में साथ रहे पर
कृष्ण पक्ष में ना दिखता।।

बोला चंदा मेरी बहना
सुन मेरी इस बात कहूँ।
तुझे दिखूँ या नहीं दिखूँ मैं
हरदम तेरे साथ ही हूँ।।

यह खेल समय ने खेला है यह
दिखूँ कभी या छुपा रहूँ।
क्या कोई तुझे स्नेह करेगा
जितना तुझसे करता हूँ!

– गोण्डा (उत्तर प्रदेश)

हल

चित्रकथा-

अरे अम्मा जी आपने गलती कर दी..
आपका टिकट तो धीमी रेलगाड़ी का है..
और आप तेज़ सुपर फास्ट रेलगाड़ी में बैठ गई हैं.
तो मुन्ना तू एक काम कर..
..ड्राइवर को कह दे रेलगाड़ी धीमे चलाए...

पुस्तक परिचय

हिन्दी बाल साहित्य की अनुभवी वरिष्ठ रचनाकार उषा सोमानी जी की आप बच्चों के लिए दो नई कृतियाँ

मस्ती की पाठशाला

मूल्य १५०/-
प्रकाशन-ज्ञान गीता प्रकाशन
एफ-७ गली नं.१ पंचशील गार्डन
एफ नवीन शाहदरा, दिल्ली-२३

यह १७ कहानियों का रोचक संग्रह है प्रत्येक कहानी के साथ एक रेखाचित्र भी है यानि कहानी भी पढ़िए और चित्र में अपनी कल्पना से रंग भी भरिए। है न मनोरंजक प्रयोग? फिर कहानियाँ तो जोरदार है हीं।

फूलों वाली घाटी का रहस्य

मूल्य १००/-
प्रकाशन- ज्ञान मुद्रा पब्लिकेशन,
बी-२०९, गीत स्काई वैली, मित्तल
कॉलेज रोड, नवी बाग, भोपाल-८ (म. प्र.)

बालपन में रहस्य रोमांच की छटनाएँ सबसे अधिक आकर्षक लगती है ये तर्कशीलता व साहस भी बढ़ाती हैं। यह उपन्यास ऐसे ही रहस्यात्मक रोमांचकारी घटनाक्रम पर आधारित है। जो आपको अवश्य रुचिकर लगेगा।

किरन कुमारी

मूल्य ८०/-
प्रकाशक-ज्ञान मुद्रा पब्लिकेशन,
बी-२०९, गीत स्काई वैली, मित्तल
कॉलेज रोड, नवी बाग, भोपाल-८ (म. प्र.)

बालमन अनंत जिज्ञासाओं और अनूठी कल्पनाओं का अखण्ड भंडार है। उन्हें कहानी का रूप देने वाले कुशल रचनाकारों में एक है इस कृति के रचयिता श्री रामकरन। अलग-अलग पर एक से बढ़कर एक रोचक विषयों पर इसमें है १४ कहानियाँ।

परी और पीहू

मूल्य ६४.९५/-

प्रकाशक-ईरा प्रिंटिंग वर्क्स
५९-ए/१९-ए, बी. के. बनर्जी
मार्ग, प्रयागराज-२ (उ. प्र.)

डॉ. भगवान प्रसाद उपाध्याय एक अनुभवी लेखक व श्रेष्ठ शिक्षक हैं आपकी इस पुस्तक में आपकी अनेक बोधपूर्ण, रोचक और विभिन्न विषयों पर छोटी-छोटी बाल कविताएँ हैं। ये बाल कविताएँ आपको अवश्य भाएँगी भी सिखाएँगी भी।

मेहेर

मूल्य १००/-

प्रकाशक-८ सी.एस.सी.
ए. डी. ब्लॉक,
शालीमार बाग दिल्ली-८८

श्रीमती 'प्रेम मंगल' की यह बाल कविताओं की कृति कल्पना और भावजगत के साथ विचार जगाने वाली रचनाओं से समृद्ध हैं।

नई कविता शैली में होने से ये गेय न होकर भी पढ़ने योग्य हैं बोधक हैं।

पिताजी आप महान हैं

– खुशबू राजपूत

बात उस समय की है जब मैं कक्षा आठवीं में पढ़ती थी। धनतेरस के दिन हमारे विद्यालय में कुछ प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। उस समय कक्षा छठवीं और सातवीं के विद्यार्थियों के लिए वेशभूषा प्रतियोगिता थी। आठवीं से नौवीं कक्षा तक के लिए गमला प्रतियोगिता थी और दसवीं से बारहवीं कक्षा तक के लिए रंगोली प्रतियोगिता थी। इन प्रतियोगिताओं में सभी विद्यार्थियों ने बढ़–चढ़कर भाग लिया। हमारी कक्षा के लिए गमला प्रतियोगिता थी, जिसमें कक्षा की छात्राओं ने भाग लिया। कक्षा में तीन–तीन लोगों का समूह बनाया गया। समूह की छात्राओं ने आवश्यक वस्तुओं का बँटवारा कर लिया कि कौन क्या लेकर आएगी। किसी ने गमला लाना निश्चय किया तो किसी ने पौधा लाना और किसी ने सजावट का सामान। मैंने पौधा लाना उचित समझा, मेरी सहेली ने गमला तथा हमारे समूह की एक अन्य लड़की ने सजावट का सामान लाना तय किया।

विद्यालय से घर आकर मैंने पिता जी से पौधा लाने के लिए कहा तो पिता जी ने पूछा– ''क्यों? पौधा क्यों चाहिए आपको?''

तो मैंने उन्हें प्रतियोगिता के बारे में बताया। पिता जी पौधा लाने के लिए राजी हो गए और बाजार जाकर वहाँ से गुड़हल का एक पौधा लेकर आए, जिसे मैं पौधा नहीं बल्कि पेड़ कह सकती हूँ क्योंकि वह पौधा बहुत लंबा था और उस पर केवल दो ही फूल लगे हुए थे। उनमें से एक फूल मुरझा चुका था। हमें उस पौधे को देखकर बहुत खुशी हुई और मन में जल्दी विद्यालय जाने का उत्साह भी जाग उठा था।

अगले दिन मैं अपनी सहेली के साथ पौधे को लेकर शाला गई। शाला जाकर हमने देखा कि वहाँ इतने सुंदर–सुंदर पौधे रखे हुए थे कि हमें अपने पौधे को देखकर हीनभावना अनुभव होने लगी। सभी छात्राओं के पौधों पर रंग बिरंगे फूल तो खिल ही रहे थे साथ ही उनके गमले बहुत सुंदर सजे हुए भी थे, जबकि हमारे पौधे पर केवल एक ही फूल खिल रहा था।

हमारे पौधे को देखकर दूसरी लड़कियाँ हँसने लगीं। कोई–कोई तो यह भी कहने लगी कि यह पौधा है या फिर पेड़ ही उठा लाए हो... क्या लेकर आए हो.... कम से कम अच्छा सा देखकर तो लाते। मैंने और मेरी सहेली ने उन सभी बातों को अनसुना कर दिया, लेकिन एक लड़की ने कहा– ''तुम क्यों इतनी प्रसन्न हो रही हो... तुम इस प्रतियोगिता में नहीं जीतोगे।''

मैंने मुस्कुराते हुए उससे कहा– ''कोई बात नहीं, तुम तो जीत जाओगे न!.... कोई तो जीते हम नहीं तो तुम सही... अन्तर क्या पड़ता है।''

वह वहाँ से चली गई उसके बाद हमें अपना पौधा बेकार लगने लगा था।

घर आकर मैंने पौधे को लेकर पिता जी से खूब झगड़ा किया। परिणाम का दिन आया। हम तो पहले ही सोच कर बैठे थे कि हम तो नहीं जीतेंगे।

जो विद्यार्थी प्रतियोगिता में विजयी हुए थे, उनके नामों की घोषणा हो रही थी, हमारा भी नाम लिया गया तो हम एक–दूसरे को देखने लगे। विश्वास नहीं हो रहा था। लगा कि कहीं हमने गलत तो नहीं सुन लिया। जब पुन: हमारा नाम लिया गया तो हम ट्रॉफी लेने गए। उस समय एक दीदी ने चुपके से मेरे कान में कहा– ''अब तो मिठाई खिलानी पड़ेगी।''

हमें बहुत प्रसन्नता हो रही थी और हमारी विरोधी लड़कियों का मुँह उतर गया था। जब मैंने अपने पौधे की ओर देखा तो मुझे लगा कि हमारा पौधा भी बहुत प्रसन्न है।

कक्षा में हमारी कक्षा अध्यापिका ने बताया कि हमारा पौधा सबसे अलग था और हर किसी को आकर्षित कर रहा था। इसलिए जीत हमारी हुई। हमारी विरोधी लड़कियों ने उप प्राचार्य को हमारे विरुद्ध भड़काया और कहा कि उनका गुड़हल का पौधा बिल्कुल भी अच्छा नहीं है, जबकि हमारा पौधा सजावट के कारण छ: रंग बदलता है।

इसलिए अगले ही कालखण्ड में हमारे अध्यापक ने कहा– ''यदि तुम अपनी ट्रॉफी (वैजयंती) इन्हें देना चाहो तो दे दो अन्यथा विद्यालय की ओर से उन्हें दूसरी ट्रॉफी दे दी जाएगी।''

हमने अपनी ट्रॉफी देने से मना कर दिया और कहा– ''आप अपनी इच्छा से परिणाम नहीं बदल सकते। हमें ट्रॉफी निर्णय के बाद मिली है।'' फिर भी हमारी बात नहीं सुनी गई और हमारी ट्रॉफी उप प्राचार्य द्वारा उन लड़कियों को दे दी गई। तब हमारे चेहरे पर दु:ख उतर आया क्योंकि तब हम विजयी नहीं रहे थे। हमारे साथ–साथ एक और चेहरा था जो दुखी था। वह था सरिता दीदी का चेहरा। जिन्होंने कहा था– ''अब तुम्हें मिठाई खिलानी पड़ेगी।''

घर आकर हमने यह बात पिता जी को बताई। पिता जी अगले दिन शाला पहुँचे। तब तीन दिन की छुट्टी पर गई। प्राचार्य भी वापस आ गई थीं। पिता जी ने उनसे बात की तो प्राचार्य दीदी ने उप प्राचार्य और उन लड़कियों को अपने कार्यालय में बुलाया फिर उन्हें डाँटते हुए कहा– ''आप सबको पता होना चाहिए कि निर्णायक मंडल के द्वारा जो निर्णय किया जाता है, उसमें परिवर्तन करने या कराने का अधिकार किसी को नहीं होता। वैसे भी बिना किसी आडंबर के वह पौधा सबसे विशेष लग रहा था। इसलिए प्रतियोगिता की विजेता खुशबू की टीम है।''

इस प्रकार ट्रॉफी एक बार फिर हमारे पास आ गई। उस दिन मैंने सरिता दीदी को मिठाई खिलाई और पिता जी को धन्यवाद कहा। पिता जी बोले– ''तू तो कह रही थी कि हमारा पौधा अच्छा नहीं है फिर तेरी विजय क्यों हुई ?''

उस समय मैं इतना ही कह पाई– ''पिता जी आप महान हैं।''

– मथुरा (उ. प्र.)

सबसे कठिन काम

– रेनू सैनी

''माँ! ये पढ़ाई–लिखाई मेरे वश की बात नहीं है। संसार का सबसे कठिन काम है पढ़ना।'' आर्यन झल्लाकर पुस्तक को एक ओर फेंकते हुए बोला।

''मैंने तुम्हें कितनी बार कहा है कि पुस्तकों को ऐसे नहीं फेंकते। पर तुम हो कि एक कान से सुनते हो और दूसरे से निकाल देते हो।'' अंजलि क्रोध से बोली।

''तो मैं क्या करूँ? आप तो बस घर में रहती हो। विद्यालय जाकर पढ़ना पढ़े तो आपको भी नानी याद आ जाए।''

आर्यन अंजलि से ऐसे बात कर ही रहा था कि तभी दादी ने उसके इन शब्दों को सुन लिया।

दादी उसका कान खींचते हुए बोली, ''माँ से ऐसे बात करते हैं। तुम बहुत बिगड़ गए हो। मेरे लाड़–प्यार ने ही तुम्हें इतना बिगाड़ दिया है। और जो तुम अंजलि से यह कह रहे हो न कि अगर उसे शाला जाकर पढ़ना पढ़े तो नानी याद आ जाए। तो कान खोलकर सुन ले अंजलि ने एम. एससी. गणित किया हुआ है। तभी तो वह तुझे पढ़ा पाती है अक्ल के अंधे। नवीं कक्षा में आ गया लेकिन है बिल्कुल भौंदूराम।

दादी की डाँट सुनकर आर्यन चुप हो गया। वह सिर झुकाकर अपने कमरे में चला गया।

अंजलि आर्यन को लेकर बहुत परेशान थी। ऐसा नहीं है कि उसे केवल पढ़ाई को लेकर ही कोई समस्या थी, अपितु उसे हर काम में कठिनाई नजर आती थी।

दुकान पर कोई सामान लेने जाना हो, अपना कमरा ठीक करना हो, दूध पीना हो, अपनी यूनिफॉर्म ठीक से तह करके रखनी हो, इन कामों में भी उसे बहुत परेशानी होती थी। वह कभी भी इन कामों को ठीक से नहीं करता था। अंजलि जब झल्लाकर शिकायत करती तो उसका एक ही उत्तर होता, ''माँ कृपया! इन कामों के लिए मुझे मत कहा करो। यह कठिन काम मुझसे नहीं होने वाले।''

उस दिन रविवार था। आर्यन देर से सोकर उठा। स्नानघर में जाकर देखा तो पाया कि कहीं भी पानी न था। वह चिल्लाकर बोला, ''माँ! नल में पानी क्यों नहीं आ रहा? मुझे नहाना है। गर्मी से बुरा हाल है।''

अंजलि बोली, ''बेटा! पाइप लाइन खराब होने के कारण आज पानी नहीं आएगा।'' यह सुनकर आर्यन बोला, ''तो, इतनी गर्मी में मैं बिना नहाए कैसे रहूँ?''

अंजलि आर्यन को एक बाल्टी थमाते हुए बोली, ''सार्वजनिक नल पास में ही है। वहाँ से दो तीन बाल्टी पानी लेकर आ जाओ। तुम नहा लेना और बाकी का काम भी हो जाएगा।''

अवसर की गंभीरता को समझते हुए आर्यन बुरा-सा मुँह बनाकर बाल्टी उठाकर बाहर चला गया। पानी से भरी बाल्टी लेकर वह घर में घुसा तो हाँफते-हाँफते उसका बुरा हाल था। माँ को देखते ही खीझ कर उसने गुस्से में बाल्टी को फेंककर मारा जिससे सारा पानी जमीन पर गिर गया। यह देखकर अंजलि सकते में आ गई। दादी भी बाहर निकल कर आई और उसे आश्चर्य से एकटक देखती रही। आर्यन दादी को देखते ही बोला, ''क्या दादी! ऐसे घूरकर क्यों देख रही हो ? पानी से भरी बाल्टी लाना कितना कठिन काम है ? मेरी जान निकल गई। ऐसे में बाल्टी मेरे हाथ से छूट गई तो इसमें मेरा क्या दोष ?''

समीर कार्यालय से आकर बोले, ''कल मुझे अपने शहर के कुछ स्थानों पर जाकर लोगों की राय लेनी है। हमारी कम्पनी यहाँ पर एक शाला खोलना चाह रही है। शाला के लिए स्थान आदि का चयन करने से पहले लोगों की राय बहुत आवश्यक है।''

अगले दिन समीर ने आर्यन के साथ ही नाश्ता किया। वे अपना सामान लेकर निकलने ही वाले थे कि अचानक आर्यन को जाने क्या सूझी, वह बोला, ''पिता जी! अगर कोई समस्या न हो तो मुझे साथ ले चलिए। मैं यहाँ घर में पड़ा-पड़ा बोर होता रहूँगा।''

''नेकी और पूछ पूछ।'' समीर बोले। वे तुरंत आर्यन को तैयार कर अपने साथ ले चले। वे एक बिल्डिंग के सामने उतरे। उन्होंने आर्यन से कहा कि वह बाहर कुर्सी पर बैठ कर उनकी प्रतीक्षा करें। उन्हें अंदर बैठक में जाना है।

समीर के बैठक में जाने के बाद आर्यन इधर-उधर घूमने लगा। अचानक उसकी दृष्टि खिड़की पर गई तो वह यह देखकर दंग रह गया कि दो व्यक्ति रस्सी के झूले पर झूलते हुए बारहवें माले की सफेदी करने में जुटे हुए थे। जैसे ही ब्रश दीवारों को छूता, वैसे ही रस्सी हिलती और आर्यन की जान गले में अटक जाती। वह वहीं खड़ा-खड़ा सफेदी करने वाले व्यक्तियों को देखता रहा कि संकट से बिना डरे वे किस प्रकार अपने काम में जुटे थे।

समीर के आवाज लगाने पर आर्यन की तंद्रा भंग हुई

''क्या हुआ ? कहाँ खो गए ? कब से आवाज लगा रहा हूँ।'' पिता को देखकर आर्यन पलकें झपकाता हुआ बोला, ''कुछ.. कुछ नहीं। बस ऐसे ही...।''

इसके बाद वह पिता के साथ गाड़ी में बैठकर चल दिया। आगे रास्ता बंद था। समीर बाहर निकल कर देखने के लिए सड़क पर आ गए। कुछ देर में आर्यन भी निकल आया। उसके पिता ऊपर देख रहे थे। अचानक उसकी नजर आसमान में गई तो हवा में अटक गई और कंठ से गूं... गूं निकला। दो बिजली के कर्मचारी इलेक्ट्रॉनिक तारों को ठीक कर रहे थे। एक व्यक्ति का संतुलन बिगड़ा और वह नीचे लटक गया था। उसने बड़ी मुश्किल से तारों को पकड़ा हुआ था।

हवा में लहराते हुए उसे देखकर सभी लोगों की चीख निकल गई। रास्ता जाम हो गया था। जल्दी से सुरक्षाकर्मियों को बुलाया गया और जाल की सहायता से उस कर्मी की जान बचाई गई। दहशत से बिजलीकर्मी बेहोश हो गया। आर्यन का गला सूख गया। समीर ने उसे पानी पिलाया और कहा, ''बेटा! जीवन में रोजी–रोटी के लिए लोगों को अपनी जान से भी जूझना पड़ता है।''

कुछ देर बाद ट्रैफिक सामान्य हो गया। अचानक सड़क पर आर्यन की नजर एक बूढ़े व्यक्ति पर पड़ी। वह सीमेंट और ईंटों से भरी गाड़ी को कठिनाई खींच पा रहा था। बुढ़ापे और थकान के कारण वह बार–बार हाँफ जाता और माथे से पसीना पोंछने लगता। आर्यन से यह देखा नहीं गया। वह दौड़कर बूढ़े के समीप गया और गाड़ी को खींचने में उनकी सहायता करने लगा। आर्यन को देखकर बूढ़े बाबा बोले, ''बेटा! यदि मैं पढ़ा–लिखा होता तो आज यह काम नहीं कर रहा होता। संसार में सबसे सरल काम पढ़ाई करना है। पढ़–लिखकर व्यक्ति हर कठिनाई का हल ढूँढ़ सकता है। जो पढ़ता–लिखता नहीं... उसके लिए सरल काम भी कठिन बन जाता है। मैं इस बात को तब समझा हूँ जब ठोकर खा–खाकर पक गया हूँ।''

बूढ़े बाबा की बात सुनकर आर्यन की आँखों से आँसू निकल–निकल आए।

समीर ने बूढ़े बाबा को खाना–खिलाया। रास्ते भर आर्यन गहन विचारों में डूबा रहा। समीर और वे जब घर लौटे तो आर्यन सीधा अपने कमरे में चला गया। आर्यन को चुपचाप देखकर अंजलि और दादी हैरानी से बोलीं, ''इसे क्या हो गया है?'' समीर बिना किसी भाव के बोले, ''आज यह जान गया है कि कठिन काम क्या होता है?''

– नई दिल्ली

व्यंग्य चित्र

– राजेश गुजर

चूहों से छुटकारा

चित्रकथाः देवांशु वत्स

SURYA FOUNDATION

SURYA FOUNDATION

B-3/330, Paschim Vihar, New Delhi - 110063, Tel. : 011-25251588, 25253681
Email : suryainterview@gmail.com | Website : www.suryafoundation.org

सूर्या फाउण्डेशन एक सामाजिक संस्था है जो देश के विकास हेतु समर्पित है। इसके प्रमुख प्रकल्पों में ग्राम विकास, योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा का प्रचार-प्रसार, युवाओं का व्यक्तित्व विकास, राष्ट्र विकास के लिए Think Tanks, वनवासी बालक-बालिकाओं के लिए PPP Model पर विद्यालयों का संचालन तथा शिक्षा के क्षेत्र में सूर्य भारती पुस्तकें उल्लेखनीय हैं।

इन सभी प्रकल्पों के संचालन के लिए हमें ऊर्जावान तथा संघ संस्कारित युवाओं की आवश्यकता है। प्रकल्पों के लिए आवश्यक प्रशिक्षण के पश्चात् उन्हें काम पर जोड़ा जाएगा। निम्नलिखित जानकारी के आधार पर आवेदन भेजें-

Categories	Qualification	Initial Salary
Engineers, Fresher & Experienced	B.Tech.	3 - 3.6 L Per Annum
	M.Tech.	3.6 - 4 L Per Annum
MBA	MBA	3 - 4.2 L Per Annum
Post Graduate & Graduate	MCA, B.Ed., M.Ed., MSW, M.Sc., M.Com., M.A.	2.4 - 3 L Per Annum
	B.Com. with three years experience in Accounts, Purchase & Store	3 L Per Annum
	B.Sc., BCA, BBA, BA, B.Com. (Pursuing / Passed)	1.5 - 1.8 L Per Annum
Miscellaneous	योग शिक्षक, **प्राकृतिक चिकित्सक / उपचारक,** Martial Arts Teacher, Music Teacher, Stenographer (Hindi & English), Script Writer (Hindi & English), Data Entry Operator & Clerk	योग्यता अनुसार

उपरोक्त Categories में अधिक प्रतिभाशाली छात्रों को इससे भी अधिक वेतन दे सकते हैं। योग्यता एवं performance के आधार पर प्रतिवर्ष increment / promotion दिया जायेगा।

Graduate Management Trainee (GMT)

योग्यता–2023 में 10वीं, 11वीं या 12वीं की परीक्षा पास करने वाले भैया आवेदन कर सकते हैं। पिछली कक्षा में न्यूनतम अंक 60% तथा गणित में 75% अंक प्राप्त किए हों। सूर्या ट्रेनिंग सेंटर में 6 माह की प्रारंभिक ट्रेनिंग के दौरान भोजन और आवास की सुविधा मुफ्त रहेगी, साथ ही 5,000/– प्रतिमाह स्कॉलरशिप मिलेगी। इसके पश्चात् On Job Training (OJT) या Practical Campus Training (PCT) में भेजा जायेगा। OJT / PCT के साथ-साथ ग्रेजुएशन और MBA/MCA करने की सुविधा दी जायेगी। OJT / PCT के दौरान आवास तथा पढ़ाई के साथ-साथ 11वीं में 8,000/-, 12वीं में 10,000/-, Graduation 1st year में 12,000/-, 2nd Year में 15,000/-, 3rd Year में 18,000/-, MBA/MCA 1st Year में 22,000/-, MBA / MCA 2nd Year में 27,000/- Stipend प्रतिमाह मिलेगा। MBA / MCA पूरा होने के बाद 40,000/- और Work Performance के आधार पर प्रतिमाह वेतन / मानधन इससे अधिक भी हो सकता है।

कृपया विस्तारपूर्वक बॉयोडाटा के साथ निम्नलिखित पते पर CV/आवेदन भेजें। CV/आवेदन Email से भी भेज सकते हैं।

B-3/330, Paschim Vihar, New Delhi - 110063 | Email : suryainterview@gmail.com

आवेदन की अंतिम तिथि : 15 जुलाई, 2023

रवि लायट्टू का

विस्मयकारी भारत

उत्तराखण्ड राज्य में स्थित चमोली ज़िले के गांव माणा की, चीन की सीमा से सटी हुई जो आखिरी दूकान है उसका नाम ही है 'हिन्दुस्तान की आख़िरी दूकान' और बस इस दूकान के बाद अपने देश की सीमा समाप्त हो जाती है ।

25 वर्ष पहले चंदेल सिंह बड़वाल नामक व्यक्ति द्वारा खोली गयी यह दूकान अपने नाम और सीमा पर स्थिति की वजह से पूरे देश में मशहूर हो गयी है ।

धौलपुर (राज.) की अचलगढ़ पहाड़ियों पर वीराने में भोलेनाथ का एक मंदिर है जिसमें स्थापित शिवलिंग की एक अदभुत विशेषता है और वह है इसके दिनभर रंग बदलने की । वैज्ञानिक परीक्षणों से भी इस बात का अभी तक कोई परिणाम नहीं निकल पाया है कि इस शिवलिंग का रंग सबेरे लाल, दोपहर को केसरिया और सांझ होते-होते श्याम वर्ण में कैसे बदलता रहता है ।

राजेश खन्ना ने वर्ष 1969 से 1971 तक लगातार 15 सुपरहिट फ़िल्में दी थीं जो एक रिकॉर्ड है और जिसे अमिताभ बच्चन भी नहीं तोड़ पाये हैं ।

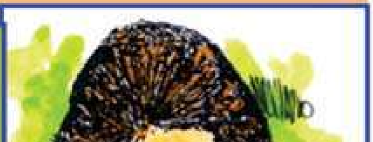

बेंगलुरु की शकुंतला देवी को सन 1982 में गिनेस बुक ऑफ़ वर्ल्ड रिकॉर्ड्स द्वारा 'ह्यूमन कैलक्यूलेटर' उस समय घोषित किया गया था जब 13 - 13 अंकों की दो संख्याओं का उन्होंने मात्र 28 सेकेंड में बिलकुल सही गुणनफल बता दिया था ।

© gyashim@gmail.com / 8077554501

डाक पंजीयन : एम.पी./आय.डी.सी./६२३/२०२१-२०२३ आर.एन.आय. पं. क्रं. ३८५७७/८५
प्रकाशन तिथि २०/०६/२०२३ प्रेषण तिथि ३०/०६/२०२३ प्रेषण स्थल- आर.एम.एस., इन्दौर

जुलाई २०२२ के अंक से देवपुत्र का संशोधित मूल्य निम्नानुसार है।
एक अंक ३०/- वार्षिक सदस्यता २००/- १५ वर्षीय सदस्यता २०००/-
एक ही पते पर १० या अधिक अंक एक साथ मँगवाने पर वार्षिक शुल्क १५०/- प्रति अंक

कृपया शुल्क भेजते समय चेक/ड्राफ्ट पर केवल
'सरस्वती बाल कल्याण न्यास' लिखें।

बाल साहित्य और संस्कारों का अग्रदूत
सचित्र प्रेरक बाल मासिक
देवपुत्र सचित्र प्रेरक बहुरंगी बाल मासिक
स्वयं पढ़िए औरों को पढ़ाइये
अब और आकर्षक साज-सज्जा के साथ
अवश्य देखें- वेबसाईट : www.devputra.com

सरस्वती बाल कल्याण न्यास, इन्दौर के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक कृष्णकुमार अष्ठाना द्वारा टी.एन. ट्रेडर्स, सांवेर रोड, इन्दौर से मुद्रित एवं ४०, संवाद नगर, इन्दौर से प्रकाशित
प्रधान सम्पादक - कृष्णकुमार अष्ठाना